जगदीश ताखर के निर्देशन में IAS/RAS की तैयारी हेतु तेजी से उभरता हुआ अग्रणी संस्थान

गीतांजलि एकेडमी

प्रशासनिक नीतिशास्त्र

RAS Mains 2016

RAS 2013

Rank 09

RAMESH KUMAR

Rank 19

DEEPANSHU CHAUDHARY

Rank 53

SURESH SANKHLA

Rank 69

AASHISH REPSWAL

Rank 99

DEEPIKA SOHU

Head Office
55, श्री गोपाल नगर, महेश नगर थाने के सामने, गोपालपुरा बाईपास
9001789123, 9529142685

नीतिशास्त्र (Ethics)

" 'Ethics' ग्रीक शब्द **'Ethica'** से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है रीति–रिवाज, प्रचलन या आदत। इसे **नीति–विज्ञान** (Science of Morality) भी कहा जाता है"। नीतिशास्त्र या आचारशास्त्र के लिये **'मोरल फिलोसफी'** (Moral Philosophy) शब्द का भी प्रयोग होता है। मोरेल शब्द लैटिन भाषा के 'Mores' शब्द से उत्पन्न हुआ है। इसका भी अर्थ है : रीति–रिवाज, प्रचलन, आदत या अभ्यास। इस तरह नीतिशास्त्र का शाब्दिक अर्थ है : **मनुष्य के रीति–रिवाजों, आदतों या अभ्यासों का विज्ञान।**

वस्तुतः नीतिशास्त्र वह विज्ञान है, जिसमें मानव–आचरण के **आदर्श** की मीमांसा होती है, जिससे मनुष्य का कर्त्तव्याकर्त्तव्य और उसके कर्मों के औचित्य–अनौचित्य का ठीक–ठाक निर्णय किया जा सके। चूँकि आचरण का आधार **चरित्र** है। इसलिये इसे चरित्र–विज्ञान भी कहा जा सकता है।

नीतिशास्त्र का सम्बन्ध मनुष्य के केवल **ऐच्छिक क्रिया या आचरण** से है। रीति–रिवाज, प्रचलन या आदत मनुष्य के वैसे कर्म है, जिसका उसे अभ्यास हो गया है। ये सब मनुष्य के अभ्यास जन्य आचरण हैं। मनुष्य की इन ऐच्छिक क्रियाओं को ही **आचरण** (Conduct) कहा जाता है। इन्हें किन्हीं संकल्प या इच्छा से किया जाता है। मनुष्य की सभी क्रियाएँ ऐच्छिक नहीं होती जैसे : **छींकना, साँस लेना** आदि। इन क्रियाओं से **नीतिशास्त्र का सम्बन्ध नहीं** है।

"नीतिशास्त्र एक नियामक विज्ञान (Normative Science), या आदर्श–मूलक विज्ञान है"। इस कथन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकालते हैं :

1. नीतिशास्त्र एक विज्ञान है।
2. एक आदर्श–मूलक विज्ञान है।
3. यह केवल मनुष्य के आचरण पर विचार करता है। **आचरण ऐच्छिक क्रियाओं से सम्बन्धित** होती है। आदत से विवश होकर किये गये कर्मों को भी **ऐच्छिक** ही माना जाता है।
4. यह केवल समाज में रहने वाले मनुष्यों के आचरण पर निर्णय देता है।
5. मानव आचरण के औचित्य एवं अनौचित्य, शुभता–अशुभता का निर्धारण होता है अर्थात् कौन कर्म उचित है, कौन कर्म अनुचित है।
6. हमारा आचरण कैसा होना चाहिये – इससे नीतिशास्त्र सम्बन्धित है।
7. **नीतिशास्त्र का मुख्य विषय** नैतिक मानदण्ड, (Moral Standard), नैतिक सिद्धान्त, आचरण के नियम या जीवन के वास्तविक आदर्श की पहचान एवं उसकी स्थापना करना है।

सुकरात के अनुसार सद्गुण
(Socrates's View of Virtue)

प्रश्न : सद्गुण का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

'Virtue' शब्द लैटिन के विर (Vir) से उद्भूत हुआ है – पुरुषत्व या वीरता। साहस, विवेक, संयम, न्याय, अहिंसा, मैत्री आदि सद्गुण माने जाते हैं। सद्गुण आत्मा के नैतिक विकास का सूचक है। यह चरित्र की श्रेष्ठता एवं उत्कृष्टता का सूचक है।

प्रश्न : सद्गुण का स्वरूप क्या है ?

सुकरात के अनुसार सद्गुण ज्ञानरूप, वस्तुनिष्ठ, सार्वभौम, अविभाज्य व एक है। बौद्धिक सुख–प्राप्ति इसके आचरण से ही सम्भव है।

प्रश्न : ज्ञान व सद्गुण में क्या सम्बन्ध है ?

सुकरात के अनुसार ज्ञान व सद्गुण में **अनिवार्य व अभेद सम्बन्ध** है। सद्गुण ज्ञान का परिणाम है। ज्ञान से ही समस्त सद्गुणों का उद्भव होता है। ज्ञान सद्गुणी बनने की अनिवार्य एवं पर्याप्त शर्त है।

प्रश्न : सद्गुण शिक्षणीय है।

सुकरात के अनुसार सद्गुण ज्ञानरूप है और ज्ञान शिक्षणीय है। इसलिये सद्गुणों की शिक्षा दी जा सकती है।

प्रश्न : सद्गुण की एकता क्या है ?

सुकरात के अनुसार सद्गुण ज्ञान रूप है। ज्ञान एक है। अतः सद्गुणों में भी एकता है। **करुणा, संयम, साहस, न्याय** आदि सभी सद्गुण ज्ञान के विभिन्न **प्रकार** या **नाम** है।

प्रश्न : मूल सद्गुण क्या है ?

मूल सद्गुण सुख है, जो बौद्धिक व सामान्य है।

प्रश्न : सुकरात के अनुसार नैतिकता का मानदण्ड क्या है ?

सुकरात सामान्य सुख को नैतिकता का मानदण्ड मानते हैं। यह आत्मगत् नही वरन सर्वगत सुख है।

प्रश्न : व्यक्ति स्वेच्छा से बुरा नहीं होता, आशय बताइये।

मनुष्य स्वेच्छा से सुख–प्राप्ति चाहता है। सुख–प्राप्ति शुभ कर्मो पर निर्भर है। अतः व्यक्ति स्वेच्छा से शुभ कर्म करना चाहता है। वह स्वेच्छा से बुरा नहीं होता।

प्रश्न : ज्ञान व कर्म में क्या सम्बन्ध है ?

ज्ञान व कर्म में **अभेद सम्बन्ध** है। ज्ञानी ही सद्कर्मों का परिपालन करता है और **अज्ञानी** ही दुष्कर्मों से युक्त होता है।

व्यक्ति अनिच्छा से भला नहीं हो सकता।

सुकरात के अनुसार व्यक्ति **ज्ञान के अभाव** में भला काम नहीं कर सकता। जिस पुरूष को शुभ–अशुभ का ज्ञान नहीं है, उसका कर्म लाभदायक या हानिकारक हो सकता है। शुभ व अशुभ नहीं हो सकता। अच्छा बनने के लिये **अच्छाई का ज्ञान** होना नितान्त आवश्यक है। ज्ञान ही आत्मा का **विशेष गुण** है। इसके अभाव में ही व्यक्ति **दुष्कर्मों में संलग्न** होता है।

व्यक्ति की दुःख के प्रति स्वाभाविक अनिच्छा होती है। दुःख प्राप्ति अशुभ कर्मों के कारण होती है। अतः व्यक्ति अशुभ कर्मों के प्रति स्वभावतः अनिच्छुक होता है परन्तु फिर भी वह अपने जीवन में अशुभ कर्मों का सम्पादन करता है। अतः अशुभ कर्मों के प्रति अनिच्छा होने मात्र से वह **भला नहीं** हो सकता क्योंकि शुभ कर्मों के ज्ञान के अभाव के लिये वह स्वयं उत्तरदायी है। यदि वह चाहता तो सद्गुणों का ज्ञान प्राप्त कर शुभ कर्म कर सकता था।

* **ज्ञान सद्गुण है** (Knowledge is Virtue) : सुकरात के अनुसार ज्ञान इन्द्रियजन्य या प्रतीति रूप न होकर बौद्धिक एवं प्रत्यात्मक है। इसी कारण वह विशेष न होकर सामान्य होता है। परिणामतः सुकरात व्यक्तिगत सुख की बजाय **सामान्य सुख** अर्थात् सद्गुण को नैतिकता का मनदण्ड मानते हैं। सुकरात सदाचरण हेतु सद्गुणों का ज्ञान आवश्यक मानते है।
इनके अनुसार ज्ञान सद्गुण है अर्थात जिस व्यक्ति को ज्ञान है वह सदैव अपने आचरण में सद्गुणों को व्यक्त करेगा क्योंकि :

1. ज्ञान दृढ़ विश्वास के रूप में होता है, जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति के चरित्र में अपरिहार्य रूप से होती है।
2. ज्ञान व सद्गुण में तादात्म्य सम्बन्ध है।
3. ज्ञान का स्वरूप ही ऐसा है कि वह मानव आचरण में ही व्यक्त होगा। आचरण में अभिव्यक्त होने पर ही हम यह जानते हैं कि अमुक व्यक्ति को सद्गुणों का ज्ञान है।

सुकरात के अनुसार ज्ञान व तदनुरूप आचरण में **अभेद सम्बन्ध** है। व्यक्ति सद्गुणों के ज्ञान के बिना सद्कर्मों का सम्पादन नहीं कर सकता। अब यदि कोई व्यक्ति दुष्कर्मों का सम्पादन कर रहा है तो वह अवश्य ही **अज्ञानी** होगा। स्पष्ट है कि सुकरातानुसार **ज्ञान सद्गुण के लिये आवश्यक एवं पर्याप्त शर्त है।** इस प्रकार वे ज्ञान और आचरण के गठबंधन को नैतिकता का **उत्कर्ष** मानते हैं। इसी संदर्भ में यह कहा जाता है कि : **"ज्ञान ही सद्गुण हैं व सद्गुण ही ज्ञान हैं"।** दोनों एकरूप, सार्वभौम, बुद्धि आधारित, शिक्षणीय, अविभाज्य एवं अपरिवर्तनशील है।

संक्षेप में :

* **ज्ञान** → सद्गुण → सदाचरण → बौद्धिक सुख की प्राप्ति → सामान्य सुख → सार्वभौमता।
* **अज्ञान** → दुर्गुण → दुष्कर्म → इन्द्रिय सुख → व्यक्ति सापेक्ष → अव्यवस्था का जन्म।

"ज्ञान ही सभी नैतिक कर्मों का आधार है"।

यदि किसी मनुष्य को शुभ का ज्ञान है तो वह उसे प्राप्त करेगा या प्राप्त करने का प्रयास करेगा। वह शुभ कर्म अवश्यक करेगा बुरा नहीं करेगा। इसलिये ज्ञान सद्गुणों का आधार है। कोई भी व्यक्ति बुराई को जानते हुये भी बुराई को जानते हुये भी बुराई की इच्छा नहीं करता और न बुराई करता है।
यदि किसी व्यक्ति को शुभ का ज्ञान नहीं है तो वह दुष्ट होने से नहीं बच सकता। ज्ञानाभाव में अच्छा काम नहीं कर सकता। कोई व्यक्ति जानबूझकर दुर्गुणी नहीं बनता। ये तो उसके अज्ञान का परिणाम है।
अतः ज्ञान ही व्यक्ति को नैतिक बनाता है। कोई व्यक्ति आकस्मिक रूप से नैतिक नहीं हो सकता। ज्ञान सद्गुणों का मूलाधार है, जबकि **अज्ञान** दुष्कर्मों एवं बुराई का मूल आधार है।

* **आलोचना :**

1. अच्छाई एवं बुराई का भेद जानते हुये भी मनुष्य कई बार बुरा **कर्म** करता है।
2. ज्ञानी होने पर भी कुछ संदर्भों में उसकी अभिव्यक्ति नैतिक जीवन में **नहीं** भी हो सकता, जैसे : **धूम्रपान**।
3. आचरण **प्रवृत्ति** पर भी निर्भर करता है और कुछ संदर्भों में प्रवृत्ति ज्ञान से असम्बन्धित हो सकती है।
4. सुकरात ने सद्गुणों की एकता मानी है, परन्तु सबको एकबद्ध करना कठिन है। सम्भव है कोई **न्यायप्रिय** व्यक्ति **साहसी न हो**।
5. सुकरात सद्गुण व शुभ में स्पष्ट भेद **नहीं** करते हैं।
6. सुकरात ने सद्गुणों का सम्बन्ध **आध्यात्मिक अमरता** से जोड़ा है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह स्वीकार्य नहीं है।

संदेश

ज्ञान व आचरण में अनुरूपता रहनी चाहिये ताकि समाज शान्तिपूर्ण, संयमित, व्यवस्थित व आनन्दपूर्ण हो सके।

प्लेटो का न्याय सम्बन्धी सिद्धान्त
(Plato's Theories of Justice)

* प्लेटों ने अपने ग्रंथ **'रिपब्लिक'** में न्याय की अवधरणा पर विस्तार से विचार किया है।
* प्लेटों ने अपने ग्रंथ 'रिपब्लिक' में **दार्शनिकराजा** की बात की है। इनके अनुसार आदर्श राज्य में न्याय की उपलब्धि विशुद्ध विवेक से सम्पन्न परम सत्य के ज्ञाता दार्शनिकों के संरक्षण में हो सकती है, जहाँ वासना प्रधान उत्पादक वर्ग और शौर्यप्रधान शासक वर्ग के ऊपर शुद्ध एवं निर्लिप्त बुद्धि से सम्पन्न दार्शनिक का पूर्ण नियंत्रण हो।
* **न्याय क्या है :** प्लेटो के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति या प्रत्येक वर्ग का अपने **स्वभाव एवं योग्यता** के अनुकूल अलग–अलग निश्चित कार्य का सम्पादन करना तथा दूसरे **वर्ग के कार्यों में हस्तक्षेप न करना ही न्याय है।** इस प्रकार प्लेटो का न्याय **कर्त्तव्य** का द्योतक है।

* प्लेटो ने अपने ग्रंथ (रिपब्लिक) को न्याय विषयक ग्रंथ (a treatis concerning justice) कहा है, क्योंकि रिपब्लिक का प्रारम्भ एवं अन्त न्याय –सिद्धान्त से होता है।

प्लेटो के सामाजिक, राजनीतिक विवेचन का सबसे प्रमुख विचार उनका न्याय विचार है। प्लेटो ने न्याय को व्यक्ति और राज्य दोनों के **प्रथम सद्गुण** (Virtue) के रूप में मान्यता दी है, अर्थात् न्याय ही व्यक्ति और राज्य दोनों की सबसे प्रमुख विशेषता और सर्वाधिक प्राप्य आदर्श है। **न्याय सर्वोपरि सद्गुण है, क्योंकि यह अन्य सभी सद्गुणों के मध्य आन्तरिक सामंजस्य एवं संतुलन को बनाये रखता है।**

प्लेटो ने न्याय की व्याख्या कानूनी आधार पर न करके **नैतिक आधार** पर की है। यहाँ न्याय व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के आधारभूत सद्गुण के रूप में स्वीकृत है। इसी कारण प्लेटो के दर्शन में 'न्याय' शब्द मूलतः कर्त्तव्य–पालन के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। कानूनतः न्याय बाह्य आरोपित शक्तियों से बाधित होता है। इसमें व्यक्ति नैतिकता का पाल बाह्य दबावों के कारण करता है, जबकि प्लेटो के दर्शन में न्याय अन्तरात्मा की आवाज है। यहाँ प्लेटो के इस न्याय की **तुलना गीता के स्वधर्म पालन** से की जा सकती है, जिसका तात्पर्य है कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह किसी वर्ण से सम्बन्धित हो, स्वेच्छापूर्वक अपने **कर्त्तव्य का पालन** करना चाहिये।

प्लोटो के अनुसार न्याय के दो पक्ष हैं :

1. व्यक्ति के लिये न्याय या (व्यक्तिगत)।
2. समाज के लिये न्याय (सामाजिक)।

प्लेटो के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा में **तीन प्रकार** के गुण पाये जाते हैं :

1. बुद्धिमता (ज्ञान)।
2. साहस (वीरता)।
3. तृष्णा (सांसारिक वस्तुओं में आसक्ति)।

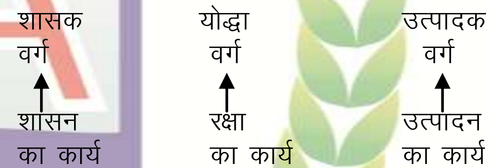
प्लेटों इन्हें ही मानवीय सद्गुण कहते हैं।

I. **व्यक्ति के संदर्भ में न्याय :** यहाँ न्याय का तात्पर्य है कि व्यक्ति की आत्मा में इन तीनों गुणों का उचित मात्रा में समन्वय होना चाहिये। प्लेटो व्यक्ति के संदर्भ में न्याय को परिभाषित करते हुये कहते हैं कि **"न्याय मानव आत्मा की उचित अवस्था है,** व्यक्ति द्वारा अपने गुण के अनुसार अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही **न्याय** कहलाता है"। संक्षेप में, अपने–अपने स्वभाव के अनुसार तद्नुरूप कार्य करना ही **प्लेटो** के अनुसार न्याय है। इस रूप में प्लेटो का यह मानना है कि **"एक व्यक्ति को केवल एक ही ऐसा कार्य करना चाहिये, जो उसके प्रकृति तथा स्वभाव के सर्वथा अनुकूल हो"।**

II. **समाज (राज्य) के लिये न्याय :** प्लेटो के अनुसार **राज्य व्यक्ति का ही वृहत् रूप** है। व्यक्ति की आत्मा में जो तीन गुण पाये जाते हैं, राज्य में उसका प्रतिनिधित्व **तीन वर्ग** करते है, जैसे : बुद्धिमता का प्रतिनिधित्व शासक वर्ग, साहस का प्रतिनिधित्व योद्धा या सैनिक वर्ग और तृष्णा का प्रतिनिधित्व **उत्पादक वर्ग** करते हैं। प्लेटो का मानना है कि राज्य के संदर्भ में न्याय का अर्थ है : राज्य के तीनों वर्गों द्वारा उनके लिये कर्त्तव्यों का पालन करना और **दूसरे वर्ग के कार्यों में हस्तक्षेप न करना**। उदाहरणस्वरूप योद्धा वर्ग के सदस्य को केवल राज्य की सुरक्षा से सम्बन्धित कार्य करना चाहिये और उसे शासन संचालन या उत्पादन प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। इस प्रकार हम यहाँ यह कह सकते हैं कि प्लेटो के अनुसार न्याय का तात्पर्य अपने स्वाभावानुरूप कार्यों का सम्पादन कर परस्पर सामंजस्य बनाये रखना है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर दार्शनिकों ने प्लेटो के न्याय सम्बन्धी विचार की कुछ विशेषताओं का विवेचन किया है :

(i) प्लेटो का न्याय सिद्धान्त **कार्यात्मक विशिष्टकरण** के सिद्धान्त पर आधारित है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वर्ग का अपना विशिष्ट **कार्य** एवं **स्थान** है, जिसके अनुसार वह कार्य करते हुये वह अपनी उन्नति और विकास करता है तथा सामाजिक उन्नति में भी सहायक होता है।



(ii) **प्लेटो का न्याय अहस्तक्षेप नीति का सिद्धान्त है।** इसमें समाज के तीनों वर्ग (दार्शनिक, सैनिक एवं उत्पादक) अपनी –अपनी प्राकृतिक योग्यताओं, क्षमताओं और प्रशिक्षण के अनुसार अपने–अपने क्षेत्र में कार्य करता है, उसी में **निपुणता** और **कुशलता** प्राप्त करता है तथा दूसरे वर्ग के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करता है। ऐसी स्थिति में समाज में न्याय का आविर्भाव होता है तथा समाज के विभिन्न वर्गों के बीच **समन्वय** और **संतुलन** बना रहता है।

(iii) प्लेटो का न्याय **आत्मसंयम** का सिद्धान्त है। प्लेटो अपने न्याय सिद्धान्त द्वारा राज्य के विभिन्न वर्गों एवं आत्मा के विभिन्न गुणों में सामंजस्य एवं एकता बनाए रखना चाहते हैं।

प्लेटो की न्याय सम्बन्धी अवधारणा कानूनी अवधारणा न होकर एक **नैतिक अवधारणा** है।

(iv) प्लेटो का न्याय सिद्धान्त **रचनात्मक** भी है। यहाँ समाज के विभिन्न वर्गों में संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है। राज्य विभिन्न प्रकार के निर्माणकारी घटकों के बीच **घनिष्ठ सम्बन्ध** बनाये रखते है।

*** आलोचना :**

(i) आलोचकों के अनुसार प्लेटो का न्याय सिद्धान्त वास्तव में न्याय सिद्धान्त नहीं है। यह केवल कर्त्तव्य पालन से सम्बन्धित एक नैतिक व्यवस्था है। **बार्कर** के अनुसार प्लेटो के न्याय में न्याय के **कानूनी पक्ष की अवहेलना की गई है**।

(ii) प्लेटो का न्याय सिद्धान्त **भेदमूलक** एवं **कुलीनतावादी** है। प्लेटो समाज का विभाजन तीन **असमान** वर्गों में करते हैं। प्रजातांत्रिक दृष्टि से यह अनुकूल **नहीं** है।

(iii) आलोचक यह भी मानते हैं कि प्लेटो का न्याय सिद्धान्त **तानाशाही या सर्वाधिकारवाद का मार्ग प्रशस्त** करता है। आधुनिक समकालीन विचारक **कार्ल पोपर** के अनुसार प्लेटो ने अपने न्याय सिद्धान्त में शासक वर्ग को **ज्ञान** का प्रतिनिधि मान लिया है। ऐसी स्थिति में शासक वर्ग के निर्णय को **सदैव सही माना जाएगा**। उस पर किसी भी प्रकार का नियन्त्रण नहीं हो पाता है।

(iv) अरस्तू के अनुसार प्लेटो का न्याय सिद्धान्त **'अत्यधिक एकीकरण'** और **'अत्यधिक पृथक्कीकरण'** की भावना पर आधारित है। इससे एकता की स्थापना करने में **कठिनाई** होती है।

*** महत्व :**

(i) प्लेटो ऐसे प्रथम दार्शनिक हैं, जिन्होंने न्याय का एक **सुव्यवस्थित सिद्धान्त प्रतिपादित किया**। इनके पूर्व प्रचलित कोई सिद्धान्त **व्यवस्थित एवं तर्कसंगत नहीं हैं**।

(ii) प्लेटो ने न्याय को व्यक्ति एवं राज्य दोनों से जोड़कर उसे व्यापक रूप प्रदान किया।

मनोवैज्ञानिक सुखवाद
(Psychological Hedonism)
उपयोगितावाद (Utilitarianism)
(बेंथम, जे. एस. मिल)

*** सुखवाद (Hednism) : सुखवाद वह नैतिक सिद्धान्त है जो सुख प्राप्ति को ही जीवन का चरम लक्ष्य मानता है**। जो कर्म इसमें सहायक है वह शुभ है और जो बाधक है वह अशुभ है। सुखवाद के अनुसार मानव जीवन का एकमात्र साध्य सुख प्राप्त करना है। सुख ही मनुष्य के प्रत्येक ऐच्छिक कर्म का विषय है। प्रत्येक मनुष्य सुख या अधिक से अधिक सुख प्राप्त करना चाहता है और विपरीततः दुःख या अधिक से अधिक दुःख को छोड़ना चाहता है। जो कार्य सुख को उत्पन्न करता है, वह उचित है और जो दुःख को उत्पन्न करता है, वह अनुचित है। इस प्रकार **सुख** अच्छे और बुरे का प्रतिमान (मानदण्ड) है। इस रूप में सुखवाद **परिणाम सापेक्ष नैतिकता** का समर्थन करता है, क्योंकि यहाँ परिणाम के आधार पर **उचित** या अनुचित का निर्धारण किया जाता है।

पश्चिम में सुखवाद के जन्मदाता यूनान के **अरिस्टिपस** थे। वे **सिरेने** के निवासी थे। इसीलिये जिस सम्प्रदाय की उन्होंने स्थापना की, उसे **सिरेनाइक** (Cyrenaics) मत कहा जाता है। यही मत सुखवाद का पहला संस्करण है।

सुख की प्राप्ति तब होती है, जब हमारी इच्छा या वासना पूर्ण होती है। इसीलिये इसे भावना प्रधान कहा जात है। इसके दो रूप है :

मनोवैज्ञानिक सुखवाद के अनुसार मनुष्य स्वभावतः सुख की खोज करता है। सुख ही मनुष्य के कर्मों का स्वाभाविक एवं सामान्य लक्ष्य है। (The sole object of human desire is pleasure.)।

*** नैतिक सुखवाद** (Ethical Hedonims) **: मनुष्य को सुख की खोज करनी चाहिये। हमारा परमश्रेय सुख है, यह आदर्शात्मक सुख है।**

नैतिक सुखवाद मनुष्य के **कर्त्तव्य** का निर्धारण करने के लिये सुख को एकमात्र **अनिवार्य मानदण्ड** मानता है।

नैतिक सुखवाद के अनुसार ''मनुष्य के सुख में सहायक प्रत्येक कर्म **शुभ** तथा उसके सुख में बाधक प्रत्येक कर्म **अशुभ** है। सुख ही अपने आप में **शुभ** तथा **वांछनीय** है और दुःख अपने आप में अशुभ या अवांछनीय है''।

इस सिद्धान्त के मुताबिक :

1. प्रत्येक सुखद अनुभव अपने आप में शुभ तथा वांछनीय है।
2. प्रत्येक दुःखद अनुभव अपने आप में अशुभ तथा अवांछनीय है।
3. दो अनुभवों में से जो अधिक दुखद है, वह अपने आप में अशुभ या अवांछनीय है।

''सुख या दुःख के अतिरिक्त कुछ भी अपने आप में शुभ और अशुभ नहीं है''।

मनोवैज्ञानिक सुखवाद :

- मनुष्य के प्रत्येक कर्म का हेतु सुख है।
- मनुष्य के प्रत्येक कर्म का विषय सुख है।
- मनुष्य की प्रत्येक इच्छा की तृप्ति या फल सुख है।

इस प्रकार मनोवैज्ञानिक सुखवाद सुख को कर्मों का हेतु, विषय या फल या तीनों मानता है, किन्तु वह सुख को जीवन का साध्य नहीं मानता है या **सुख को श्रेय नहीं समझता है**।

नैतिक सुखवाद मनोवैज्ञानिक सुखवाद से इस बात से भिन्न है, कि वह मात्र सुख को श्रेय मानता है। नैतिक सुखवाद कहता है कि सभी ऐच्छिक कर्मों का साध्य सुख या अधिक से अधिक सुख होना चाहिये, जबकि मनोवैज्ञानिक सुखवाद कहता है कि सभी कर्मों का प्रेरक–हेतु सुख या अधिक से अधिक सुख है। पहला सुख को **आदर्श** मानता है तो दूसरा **यथार्थ**। पहले के अनुसार सुख प्राप्त नहीं किन्तु प्राप्तव्य है,

जबकी दूसरे के अनुसार सुख नित्य प्राप्त है। पहले में सुख औचित्य तथा अनौचित्य का प्रतिमान है तो दूसरे में सुख कर्मों का मात्र प्रेरक है।
सुख इच्छा का स्वाभाविक विषय है।

– वस्तु विषयक इच्छा वस्तु के लिये नहीं, बल्कि उससे मिलने वाले **सुख के लिये** होती है। वस्तुएँ **स्वतः साध्य** नहीं है, बल्कि सुख की साधन मात्र हैं अर्थात् **सुख साध्य है, सुखद वस्तु साधन मात्र है।**
– **समर्थन** : सिरेनाइक, एपिक्युरस, हॉब्स, बेन्थम, मिल, श्लिक।

* **उपयोगितावाद : उपयोगितावाद वह प्रयोजनवादी नैतिक सिद्धान्त है, जिसके अनुसार 'अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख' ही शुभ का एकमात्र मानदण्ड है। इसके समर्थक बेंथम, मिल आदि हैं।**

बेन्थम

* **पुस्तक** : Principles of Morals and Leglislation.

- निकृष्ट परार्थवादी।
- भावनात्मक परार्थवादी।
- निकृष्ट परार्थवादी सुखवादी।
- निकृष्ट उपयोगितावादी।

* **निकृष्ट कार्य का अर्थ** : निकृष्ट क्योंकि वे सुखों में गुणात्मक भेद नहीं मानते। सभी सुख गुण की दृष्टि से समान हैं। सुख की मात्रा बराबर होने पर ताश का खेल उतना ही अच्छा है, जितना कविता पाठ।

* **परार्थवादी क्यों ? : वे सुखवादी परिगणना में व्यापकता (Extent) को स्वीकारते** है। उनके अनुसार वही सुख श्रेयस्कर है, जिसका सुख अधिक से अधिक व्यक्तियों को मिल सके।

* **मापदण्ड** : सुख का केवल एक मापदण्ड है, वह परिमाण (मात्रा, Quantity) है। जिस सुख का परिमाण जितना ही अधिक होगा, वह सुख उतना ही अधिक वांछनीय होगा। सुख के परिमाण मापने के सात आधार है, जिसे सुखवादी परिगणना (Hedonistic Calculus) अथवा **नैतिक गणित (Moral Arithmatic) कहते हैं।**

1. **तीव्रता (Intensity)** : वह सुख अधिक अच्छा है, जो दूसरे सुख से अधिक **तीव्र** है।
2. **अवधि (Duration)** : सुखों में से वह अधिक **वरणीय** है, जिसकी अवधि अधिक है।
3. **निकटता (Proximity)** : निकटस्थ सुख दूरस्थ सुख की अपेक्षा **वरणीय** है।
4. **निश्चितता (Certainty)** : निश्चित सुख अनिश्चित सुख की **अपेक्षा** अधिक वरणीय है।
5. **शुद्धता (Purity)** : शुद्ध सुख वह है, जो **दुःख** से व्याप्त नहीं होता है।
6. **उत्पादकता (Productivity or Frecundity or Fruitfulness)** : वह सुख जो अन्य अनेक सुखों का जन्मदाता है।
7. **व्यापकता (Extent)** : अधिक व्यापक सुख कम व्यापक सुख की अपेक्षा **वरणीय** है।

* **व्यापकता (Extent) को मानने के कारण बेन्थम परार्थवादी हो जाते है।** बेन्थम के परार्थवादी का आधार है : **मनोवैज्ञानिक सुखवाद।**

* **मनोवैज्ञानिक सुखवाद** : ''प्रकृति ने मनुष्य को सुख–दुःख के साम्राज्य में रखा है, ये सुख–दुःख ही मनुष्य के कर्मों के निर्धारक है''। मनुष्य का उद्देश्य है : **सुख की प्राप्ति** और **दुःख की निवृत्ति।** मनुष्य स्वभावतः अपने अधिकतम सुख की खोज करता है।

* **''मनुष्य स्वभावतः अपना अधिकतम सुख चाहता है''।** मनुष्य कभी अपनी अँगुली भी न हिलाये, यदि उसे पता हो कि इससे कोई फायदा उसे नहीं होगा। मनुष्य स्वभावतः **स्वार्थी** है।

* **मानव स्वार्थ से परार्थ की और कैसे ?**

* बेन्थम ने इसके **चार कारण** बताये हैं :
इन्हें **नैतिक आदेश या नैतिक अनुशस्ति** कहते हैं। **(Moral Sanctions)**।

1. **प्राकृतिक आदेश** (Physical or Nature Sanctions)
2. **सामाजिक आदेश** (Social)
3. **राजनीतिक आदेश** (Political)
4. **धार्मिक आदेश** (Religious)

– बेंथम इन चारों को नैतिक अंकुश (Moral Sanctions) कहते हैं।
– **ये चारों बाह्य आदेश (External Sanctions) हैं, जो व्यक्ति को परार्थवादी बनने को बाध्य करते हैं।**

* अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख – हसीचन की यह उक्ति है।

बेन्थम से सम्बन्धित प्रमुख पद (Term) :

1. सुख–दुःख का साम्राज्य।
2. सुख और दुःख को तौलने की बात।
3. स्वप्न मत देखो की कोई व्यक्ति कानी अँगुली भी हिलायेगा।
4. प्रत्येक व्यक्ति **अपने ज्यादा** निकट है।
5. प्रत्येक व्यक्ति की गिनती **एक** है, एक से अधिक नहीं।
6. ताश का खेल, कविता पाठ।

* **बेन्थम का सार :**

- **जीवन का आदर्श** : अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख।
- **निकृष्ट क्यों :**

– सुख में केवल परिणामात्मक भेद।

– सुखवादी परिगणना (Hedonistic Calculus)।
– सुख को मापने के सात आधार।
– मनोवैज्ञानिक सुखवाद।
– स्वभावतः अपने सुख की खोज।
■ नैतिक आदेश या बाह्य आदेश जिसके भय से मनुष्य परार्थी बनता है।

जॉन स्टूवर्ट मिल

* **पुस्तक :** Utilitarianism.
* ''कोई कम उसी अनुपात में उचित है, जिस अनुपात में आनन्द की प्राप्ति होती है तथा उसी अनुपात में अनुचित जिस अनुपात में **दुःख** की प्राप्ति होती है''।
* **मत या सिद्धान्त :** Refined or Qualitative Utilitarianism (परिष्कृत उपयोगितावाद)।
* **मिल का कथन :** किसी वस्तु की इच्छा करना और उसे **सुखद** समझना और किसी वस्तु से दूर **भागना** तथा उसे **दुःखदायी** समझना सर्वदा अपृथक तत्व है।
* **नैतिक सुखवाद :** चूंकि मानव स्वभाव से सुख प्राप्ति की इच्छा करता है। अतः यह उसका नैतिक कर्त्तव्य है कि वह सुख प्राप्ति की इच्छा करता **रहे**, उसे सुख की इच्छा करनी **चाहिये**।
* '' तर्क – कोई वस्तु दृश्य है, इसका एकमात्र प्रमाण है कि लोग उसे वास्तव में देखते हैं। कोई शब्द श्रव्य है इसका एकमात्र आधार यह है कि लोग उसे **सुनते** हैं। इस प्रकार वांछनीय होने का एकमात्र आधार यह है कि लोग सचमुच उसकी **इच्छा** करते हैं। चूँकि मानव स्वभावतः सुख की इच्छा करता है। अतः सुख की **इच्छा की जानी चाहिये** ''।
यहाँ मनोवैज्ञानिक सुखवाद के आधार पर नैतिक सुखवाद को निकाला गया है। दूसरे शब्दों में **तथ्यात्मक से मूल्यांकन निष्कर्ष** को निकाला गया है। (Value is **entailed by natural** properties)। **'है'** से **'चाहिये'** को निकाला गया है। मूर के अनुसार यहाँ **प्रकृतिवादी दोष (Naturalistic Fallacy)** है।

* **स्वार्थ से परार्थ की ओर कैसे ?**
■ **रूचि का रूपान्तरण :** परार्थ का जन्म और विकास स्वार्थ से होता है। मिल के अनुसार प्रारम्भ मनुष्य दूसरों के दुःख को दूर करने में अपना **दुःख** दूर करता है, अर्थात् परोपकार का प्रयोग वह अपने **सुख प्राप्ति** के **साधन के** रूप में करता है, पर बार–बार ऐसा करने से मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त रूचि के रूपान्तरण के अनुसार हमारी **अभिरूचि साध्य** से हटकर साधन में चली जाती है, अर्थात् साधन ही साध्य हो जाता है। इस प्रकार हम अपना सुख भूलकर दूसरों की **भलाई में ही आनंद उठाने लग जाते हैं।** इस प्रकार **मनुष्य में परोपकार की भावना का उदय होता है।**

■ **परोपकार करने के लिये हम बाध्य क्यों होते हैं ? :** मिल बेन्थम की तरह चार बाह्य आदेशों को मानते हैं, जिसके कारण मनुष्य अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख का **आदर्श** अपनाता है। इसके साथ–साथ मिल एक **आन्तरिक आदेश को भी** स्वीकार करते हैं।
■ चार बाह्य आदेश (नैतिक अंकुश) + एक आन्तरिक आदेश या आन्तरिक अंकुश।

1. प्राकृतिक आदेश + आन्तरिक आदेश (Internal Sanction of Conscience)।
2. राजनीतिक आदेश (The pleasure and pains of the moral sentiments)।
3. सामाजिक आदर्श। 4. धार्मिक आदेश।

* **आन्तरिक आदेश या मनुष्य की आत्मा का अंकुश :** मानव जाति के सुख की भावना दूसरों की अनुभूतियों एवं दुःखों के प्रति **सम्मान का भाव,** कर्त्तव्य के उल्लंघन से उत्पन्न दुःख की अनुभूति, मनुष्य की सामाजिक **अनुभूतियाँ** अर्थात् अन्य मनुष्यों के साथ मिलकर रहने की **इच्छा**। यह सामाजिक भावना मनुष्य में जन्मजात नहीं तो प्राकृतिक अवश्य है।
* **Mill :** "The internal sanction is a feeling for the happiness of mankind, a feeling of regard for the feeling and pains of others - the social feeling of mankind - the desire to be in unity with our follow creatures which if not innate are none the less natural".
■ सुखों में मात्रात्मक भेद के साथ–साथ गुणात्मक भेद (Pleasure vary in kind as well as degree)।
■ सुख के दो प्रकार **इन्द्रिय सुख** और **बौद्धिक सुख।**
■ सुखों के मूल्यांकन में उनके **परिमाण** के साथ–साथ **गुणों** को भी ध्यान में रखना चाहिये।
■ मिल गुणात्मक सुख को श्रेष्ठ मानते हैं।

* **गुणात्मक सुख को श्रेष्ठ क्यों मानते हैं ?**
■ **योग्य निर्णायक (Competent Judge) :** योग्य निर्णायक कौन ? जिसने दोनों प्रकार के सुखों का अनुभव किया है। यदि निर्णायकों में मतभेद हो तो बहुमत को महत्व दिया जायेगा। इन निर्णायकों के निर्णय का आधार क्या है ?
■ **गरिमा की भावना** (Sense of Dignity) **:** इसी भावना के आधार पर योग्य निर्णायक बौद्धिक सुखों को शारीरिक सुख से योग्य मानते हैं।
■ **कथन :** मनुष्य एक संतुष्ट सुअर होने की अपेक्षा असंतुष्ट मनुष्य होना पसन्द करता है। वह संतुष्ट मनुष्य की अपेक्षा असंतुष्ट सुकरात होना पसन्द करता है।

- **बेन्थम एवं मिल में समानता :**

1. दोनों के दर्शन का आधार मनोवैज्ञानिक।
2. दोनों का दर्शन नैतिक सुखवादी है। हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम सुख की खोज करे।
3. दोनों परार्थवादी है : अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख है।
4. दोनों उपयोगतावादी।

* जो उपयोगी है, वह उचित अर्थात् नैतिक है। चूँकि सुख उपयोगी है। अतः सुख उचित है।

* सुख ही शुभ है।

* **बेन्थम एवं मिल में अन्तर :**

1. बेन्थम केवल मात्रात्मक भेद स्वीकार करते हैं।
2. प्रवृत्तियों में भेद : बेन्थम मानव प्रवृत्तियों में कोई **भेद नहीं मानते** है। मिल मानव प्रवृत्तियों में **भेद मानते हैं।**

* गुण भेद से तो कुछ उच्च कुछ निम्न है। बौद्धिक प्रवृत्ति शारीरिक प्रवृत्ति से अच्छी है।

* **व्यक्ति की धारणा में अन्तर :**

- **बेन्थम :**

1. मानव–मानव में कोई अन्तर नहीं है। **प्रत्येक व्यक्ति समान है।** प्रत्येक व्यक्ति की गिनती **एक** हैं।
2. मानव पशु से अधिक नहीं है। प्राणी सदैव सुख की खोज करता है, चाहे वह पशु हो या मानव।

- **मिल** : न केवल मानव पशु से भिन्न है, बल्कि मानव–मानव में भी भिन्नता है। मूर्ख और विद्वान में अन्तर है।

* **स्वार्थ से परार्थ मार्ग की ओर कैसे ?**

- **बेन्थम** : चार बाह्य कारण।
- **मिल :** चार बाह्य गुण + आन्तरिक कारण।

* **अधिकतम सुख के मापदण्ड का आधार :**

- **बेन्थम** : सुखवादी गणना।
- **मिल :** मानवता के मूल्यों को समझकर गुणात्मक रूप से **श्रेष्ठ गुणों को ही जीवन** का लक्ष्य है।
- **सामान्य सुख** (General Happiness) – मिल।

* **कर्म उपयोगितावाद (Act-Utilitarianism) :**

- **समर्थक : बेन्थम, मूर।**
- वही कर्म उचित है, जो अधिकतम **सुख** उत्पन्न करता है।
- कर्म उपयोगितावाद केवल किसी **कर्म की अधिकतम उपयोगिता** पर ही ध्यान केन्द्रित करता है। वह कर्म नियमानुसार है या नहीं, न्यायपूर्ण है या नहीं, इस प्रश्न का उसके लिये कोई महत्व नहीं है।

* **नियम उपयोगितावाद** (Rule Utilitarianism) :

- **समर्थक** : जॉन ऑस्टिन, **जे. एस. मिल** आदि।
- इसके अनुसार किसी **कर्म** का औचित्य उसके **परिणामों** से निर्धारित नहीं किया जाना चाहिये, बल्कि जिस नियम के अन्तर्गत **वह कर्म आता** है उस नियम के **अपनाने** के परिणामों से निर्धारित किया जाना चाहिये।
- यह सिद्धान्त किसी विशेष कर्म की अधिकतम उपयोगिता के स्थान पर **सामान्य नियम** की अधिकतम उपयोगिता को ही महत्व देता है। इस सिद्धान्त के अनुसार, हमें केवल वही कर्म करना चाहिये, जो ऐसे सामान्य नियम के अनुरूप हों जिनकी वास्तव में अधिकतम उपयोगिता हो।

स्वातंत्र्य की समस्या
(Problem of Freedom of Will)

* बिना किसी बाह्य प्रलोभन या दबाव के अपनी इच्छानुसार किसी कर्म को करने या न करने की स्वतंत्रता ही संकल्प की स्वतंत्रता कहलाती है।

* **संकल्प की स्वतंत्रता के लिये निम्न शर्तों का होना आवश्यक है।**

- **कर्म करने की क्षमता या सामर्थ्य :** मनुष्य उसी कर्मों को करने के लिये स्वतंत्र है, जिसको करने के लिये उसके पास शारीरिक और मानसिक क्षमता हो। अन्य शब्दों में – **"यदि वह चाहे तो वह कर सकता है"।**
- **ज्ञान और उद्देश्य** : मनुष्य को केवल उन्हीं कर्मों के लिये उत्तरदायी ठहराया जा सकता है, जिन्हें :

– वह सोच–समझकर करता है।

– उद्देश्य को ध्यान में रखकर **जान–बूझकर** करता है।

– उद्देश्य से **प्रेरित** होकर करता है।

– **मनुष्य वैसे कर्मों के लिये उत्तरदायी नहीं है जो :**

→ जिसको उसने **अज्ञानवश** किया।

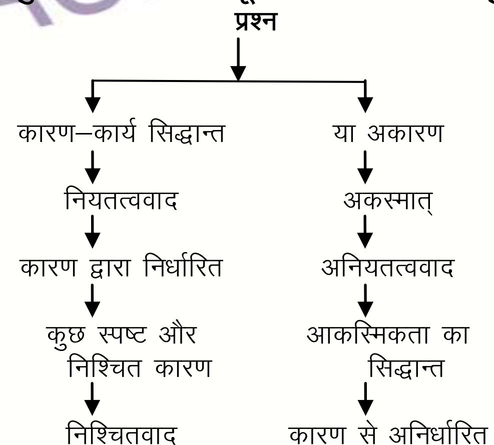
→ बाह्य शक्ति से **बाध्य होकर** करता है।

→ जिसमें **इच्छा संघर्ष** नहीं है।

→ जहाँ कोई **अन्य विकल्प** नहीं हो।

- **विकल्प की उपस्थिति होनी चाहिये** : किसी विशेष अवसर पर मनुष्य जो कर्म करता है, उस अवसर पर उस कर्म से भिन्न कर्म करने का विकल्प होना चाहिये।

मनुष्य द्वारा स्वतंत्रतापूर्वक किसी कर्म का चुनाव



* **नियतत्वावाद** (Determinism) : मनुष्य के प्रत्येक कर्म का कोई न कोई कारण अवश्य होता है, चाहे वह ऐच्छिक हों या अनैच्छिक।

* कारणता सिद्धान्त न केवल प्राकृतिक घटनाओं पर लागू होता है, बल्कि मनुष्य के **कर्मों** पर भी लागू होता है। **कर्म सिद्धान्त नियतत्ववाद का पोषक है।**

* **मुख्य बातें :**

- व्यक्ति के **व्यक्तित्व** एवं **चरित्र** का ज्ञान होने पर हम उसके **भावी कर्मों** के बारे में भविष्यवाणी कर सकते हैं।
- किसी परिस्थिति में कोई मनुष्य क्या करेगा ? इसका अनुमान लगाया जा सकता है, यदि उसकी आदत, रूचि, इच्छा, विचार, मूल्य एवं आदर्शों का भली भाँति ज्ञान हो।
- **प्रायश्चित (Repent) की सार्थकता :** बुरे कर्मों को करने के बाद हम पश्चाताप करते हैं। इसका अर्थ है कि **"हम सोचते हैं कि जैसा हमने किया वैसा हम नहीं भी कर सकते थे"।**
- नियतत्ववाद के अनुसार, मनुष्य जो कुछ करता है, वह उसे करने के लिये **बाध्य नहीं** है, क्योंकि कोई अन्य व्यक्ति या बाह्य परिस्थिति उसे **अनिवार्यता कुछ विशेष कर्म करने के लिये प्रेरित नहीं करता।**
- यदि मनुष्य चाहे तो वह उससे भिन्न कर्म कर सकता है, जो उसने किया है, अर्थात् यदि मनुष्य का **स्वभाव** या **चरित्र** भिन्न होता तो वह उससे भिन्न **कार्य** कर सकता था।
- स्पष्ट है कि नियतत्ववाद मनुष्य के **संकल्प स्वातंत्र्य** का विरोधी नहीं है, वह मनुष्य के **नैतिक उत्तरदायित्व का निषेध नहीं** करता।



* **अनियतत्ववाद** (Indeterminism) : आकस्मिकतावाद के अनुसार मनुष्य के कर्म अकस्मात् हो जाते है, इसका कोई कारण बताना सम्भव नहीं है।

* **मुख्य तथ्य :**

- मनुष्य के कर्म आकस्मिक और अप्रत्याशित हैं।
- मनुष्य के कर्म किसी **आन्तरिक** एवं बाह्य कारण पर **निर्भर** नहीं है।
- मनुष्य के कर्म उसकी **रूचियों, आदत,** इच्छा आदि के **परिणाम नहीं** है।
- मनुष्य स्वयं भी यह नहीं जान सकता कि वह किसी विशेष परिस्थिति में **क्या** करेगा।
- मनुष्य के **भावी जीवन** के बारे में **अनुमान** नहीं लगाया जा सकता है।
- मनुष्य की **चयन प्रक्रिया** निर्धारित नहीं है।

* **दैववाद (भाग्यवाद, Fatalism) :**

- मनुष्य के **सभी कर्म** और उसके **परिणाम ईश्वर** या किसी दैवी सत्ता द्वारा पहले से ही निश्चित रहते हैं। 'मानव' अपने प्रयासों से इसमें **परिवर्तन** नहीं कर सकता।

* **मुख्य तथ्य :**

- जो होना है, वह होकर रहेगा।
- कर्म एवं परिणाम पूर्व निर्धारित है।
- मनुष्य किसी परिस्थिति विशेष में क्या कर्म करेगा, यह पूर्णतः **निश्चित** है, यहाँ बाध्यता है।
- ईश्वर की इच्छा या आज्ञा के बिना दुनिया में कुछ भी नहीं हो सकता।

* **समस्या :**

- मनुष्य के संकल्प स्वातंत्र्य को समाप्त कर देता है।
- मनुष्य को अपने कर्मों के लिये **ऊत्तरदायी** नहीं माना जा सकता।
- पश्चाताप की भावना **निरर्थक** हो जाती है।

मार्टिन्यू : "या तो संकल्प–स्वातंत्र सत्य है या नैतिक निर्णय भ्रामक है"। (Either freedom of will is a fact or moral judgement a delusion)

कान्ट :
"नैतिकता के लिये संकल्प–स्वातंत्र आवश्यक है"।
"तुम्हें करना चाहिये। अतः तुम कर सकते हो"। ("Thou oughtest therefore thou cast.")

- "स्वतन्त्रता का अर्थ है आत्म स्वातन्त्र"। स्वातंत्रता का अर्थ है, उत्तरदायित्व अर्थात् मनुष्य अपने **अच्छे** या **बुरे** कर्मों के लिये **स्वयं उत्तरदायी** है।
- **ऐच्छिक कर्म (Voluntary Action) :**
- **क्या होना चाहिये :** अनेक प्रकार की इच्छाओं की उत्पत्ति हो – उनमें परस्पर संघर्ष हो, प्रयोजन और परिणाम का विवेचन हो – इच्छा के अनुरूप कार्य का निर्णय ले – विवेक की उपस्थिति हो।

- **क्या नहीं होना चाहिये :** प्रलोभन, भय, बाह्य दबाव नहीं होना चाहिये, बाह्य नियंत्रण नहीं होना चाहिये, एक ही विकल्प नहीं होना चाहिये।

नीतिशास्त्र (Kantian Ethics)

* बुद्धिवाद (Rationalism) और अनुभववाद (Empiricism) का समन्वय।
* समीक्षात्मक दर्शन (Critical Philosophy)।
* समीक्षावादी (Criticism)।
* कठोरतावादी (Rigorism) : कान्ट पर कठोरतावादी एवं आकारवादी होने का आक्षेप लगाया जाता है।
* आकारवादी (Formalism)।
* शुभ संकल्प (Good Will)।
* Highest Good or Supreme Good.
* Perfect Good or Complete Good.
* पवित्र संकल्प (Holy will)।
* नियम परिणाम निरपेक्षवाद (Rule Deontology)।
* कान्ट के अनुसार **नैतिकता की तीन आवश्यक मान्यताएँ हैं** (Three Postulates of Morality) :
- संकल्प स्वातंत्र्य (Freedom of Will)।
- आत्मा की अमरता (Immortality of Soul)।
- ईश्वर का अस्तित्व (Existence of God)।

* **पुस्तक :**
- Critique of Pure Reason (1781) (ज्ञान की सम्भावना पर विवेचन)।
- Critique of Practical Reason (1788) {नैतिकता (नीतिशास्त्र) एवं धार्मिक विश्वास सम्बन्धी विचार}।
* Critique of Judgement (1790) (सौन्दर्यशास्त्र एवं जीवविज्ञान सम्बन्धी **तथ्यों** पर प्रकाश)।
* The Fundamental Principle of Metaphysics of Moral (1785).
* Foundation of the Metaphyic of Moral (1796).
* **कान्ट** के अनुसार, नैतिकता का **प्रयोजन** हमें सुख प्रदान करना नहीं है, उसका लक्ष्य हमें सुख प्राप्त करने के **योग्य बनाना** है। जब नैतिकता को धर्म के साथ जोड़ दिया जाता है, तब यह आशा उत्पन्न हो जाती है कि किसी दिन हम उस सुख के भागीदार हो जाएंगे, जिसके योग्य हमने **अपने** को बनाया है।
* कान्ट प्रयोजनवादी नीतिशास्त्र (Teleological Ethics) का खण्डन करते हैं। वे **परिणाम निरपेक्ष नैतिकता को स्वीकार करते** है।

* कान्ट का कथन है कि ''आस्था को स्थान प्रदान करने के लिये मैंने अतीन्द्रिय ज्ञान का निषेध आवश्यक समझा''। (I was obliged to destroy knowledge in order to make room for faith)।

प्रश्न : कान्ट के दर्शन को कठोरतावाद (Rigorism) क्यों कहा जाता है ?

भावना एवं संवेगों की उपेक्षा करने पर केवल बुद्धि पर जोर देने तथा नैतिक नियमों में किसी भी प्रकार का अपवाद न मानने के कारण कान्ट के नैतिक दर्शन पर **कठोरतावादी** होने का आक्षेप लगाया जाता है।

प्रश्न : स्वतः साध्य शुभ क्या है ?

कान्ट मतानुसार ऐसा शुभ जिसका शुभत्व **देश–काल, परिस्थिति, परिणाम** या मानवीय **भावनाओं** एवं **इच्छाओं** पर निर्भर **नहीं** है, वह स्वतः साध्य शुभ है।

प्रश्न : शुभ संकल्प क्या है ?

कान्ट मतानुसार **विशुद्ध कर्त्तव्य भावना** या **कर्त्तव्य की चेतना** पर आधारित संकल्प ही शुभ संकल्प है।

प्रश्न : कर्त्तव्य क्या है ?

नैतिक नियमों के प्रति **सम्मान की भावना** से प्रेरित होकर उन्हीं नियमों के अनुरूप कर्म करने की **अनिवार्यता** या **बाध्यता** ही कर्त्तव्य है।

* **नैतिक नियम की उत्पत्ति का ज्ञान :** व्यावहारिक बुद्धि के द्वारा (Practical Reason)।
* **नैतिक नियम की विशेषताएँ :**

(i) नैतिक नियम व्यावहारिक बुद्धि (Practical Reason) की देन है, अर्थात् **सभी नैतिक नियम बौद्धिक** (Rational) है। (Reason alone determine moral principles).

(ii) किसी कार्य का नैतिक या अनैतिक होना बौद्धिक नियमों पर निर्भर करता है। नियम के अनुकूल कार्य उचित तथा नियम के विपरीत कार्य अनुचित।

(iii) नैतिक नियम आनुभविक (Empirical) न होकर **अनुभव निरपेक्ष** (a priori) है। यद्यपि हम इन नियमों को अनुभव के विषयों पर लागू करते हैं।

(iv) नैतिक नियम **निरपेक्ष आदेश** है। (Moral laws are categorical imperative)।

(v) नैतिकता का स्रोत **स्वतंत्र व्यक्ति** है, ईश्वर की आज्ञा नहीं।

(vi) नैतिकता का सम्बन्ध वास्तविकता (fact) से नहीं हैं, बल्कि आदर्श (Idea) या चाहिये (Ought) से है।

(vii) Moral Law which is imposed by practical reason, upon itself is a categorical imperative (नैतिकता नियम निरपेक्ष आदेश है)।

* आदेश दो प्रकार के होते हैं (Imperatives are two types) :

(i) सापेक्ष आदेश (Relative or Hypothetical or Conditional Imperative)।

(ii) निरपेक्ष आदेश (Categorical or Unconditional Imperative)।

1. वे आदेश जो किसी **अपेक्षा** या **शर्त** पर निर्भर हो अर्थात् जो किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये किये जाते हो, वे सापेक्ष आदेश हैं। ये **साधन रूप** में होते हैं, साध्य रूप में नहीं जैसे : यदि स्वास्थ्य चाहिये तो स्वास्थ्य के निमयों का पालन करो (स्वास्थ्य सम्बन्ध नियम)। यदि सम्पत्ति चाहिये तो अर्थशास्त्र के नियम का पालन करो (अर्थशास्त्र सम्बन्धी नियम)।

(i) **हेतु आश्रित आदेश** (Problematic Imperative) : इसका सम्बन्ध उन उद्देश्यों से है, जिसकी पूर्ति के लिये सब मनुष्य नहीं बल्कि कुछ मनुष्य प्रयास करते है, जैसे : परीक्षा में उत्तीर्ण होना है तो फिर **कोई विशेष** कला सीखनी होगी। कान्ट इसे **कौशल सम्बन्धी आदेश** कहते है।

(ii) **प्राकृत आदेश** (Assertoric Imperative) : इसका सम्बन्ध उन आदेशों से है, जिसकी प्राप्ति के लिये सभी मनुष्य स्वतः प्रयास करते है। कान्ट इसे बौद्धिक आत्म–प्रेम सम्बन्धी आदेश कहते है।

2. वे आदेश जिनके पालन करने में कोई **शर्त या लक्ष्य नहीं** रहता। निरपेक्ष आदेश ही उच्चतम नैतिक नियम है। ये ही नैतिक आदेश है :

* **नैतिक आदेश की विशेषताएँ :**

(i) यह **व्यावहारिक बुद्धि का आदेश** है, इसमें भावना का स्थान नहीं है।

(ii) **शर्त** पर निर्भर नहीं है।

(iii) उद्देश्य पूर्ति के लिये **नहीं** किया जाता है। इसका कोई **हेतु, साध्य या प्रयोजन नहीं होता**।

(iv) अन्तरात्मा का आदेश है (Conscience), बाह्य आरोपित नहीं है।

(v) व्यावहारिक बुद्धि के आदेश **सार्वभौम** और **अनिवार्य** होते है, क्योंकि बुद्धि सभी मनुष्यों में पायी जाती है।

(vi) बौद्धिक होने के कारण यह अनुभव निरपेक्ष है।

(vii) Hypothetical नहीं है, Categorical है।

(viii) ''स्वाभाविक रूप से **नैतिक नियमों** का पालन नहीं करते''। इसमें बाध्यता का तत्व होता है।

"Moral Law is categorical, since its holds absolutely and without qualification. It is imperative since it is a command that ought to be obeyed,Other imperatives are hypothetical, empirical and posterior. To do one's duty is a categorical imperative, that is rational and apriori..."

''प्रत्येक व्यक्ति राजा और प्रेम दोनों है''। वह राजा है क्योंकि वह स्वयं नैतिक नियम का **स्रष्टा** है तथा उस नियम को अपने **ऊपर** लागू करता है। वह प्रजा भी है, क्योंकि वह **स्वरचित नैतिक नियम** को अपने द्वारा पालन करने के लिये **बाध्य** है।

निरपेक्ष आदेश एक **आदेश** या **आज्ञा** है। इसमें **बाध्यता का तत्व** (Element of Boundness) रहता है। हम स्वाभाविक रूप से इसका पालन नहीं करते। कान्ट का कथन है कि **केवल अंशतः बौद्धिक प्राणी होने के कारण मनुष्य को 'उच्चतम नैतिक नियम' आदेश के रूप में स्वीकार करना पड़ता है।** यदि मनुष्य पवित्र संकल्पयुक्त पूर्णतः बौद्धिक प्राणी होता तो वह सदैव स्वभावतः नैतिकता के सर्वोच्च नियम के अनुरूप ही कार्य करता है और तब उसे इस नियम को आदेश के रूप में ग्रहण करने की आवश्यकता न होती, परन्तु मनुष्य की **भावनाएँ, इच्छाएँ** तथा **प्रवृत्तियाँ उसे सदैव इस नियम के अनुरूप कार्य नहीं करने देती।** इसी कारण उसे उच्चतम नैतिक नियम एक आदेश के रूप में स्वीकार करना पड़ता है, जिसमें बाध्यता होती है। 'आदेश' शब्द से ही स्पष्ट है कि वह मनुष्य को कोई कर्म करने अथवा न करने के लिये बाध्य करता है। **कान्ट के मतानुसार प्रत्येक आदेश में 'चाहिए' का प्रत्यय अवश्य निहित रहता है** अर्थात प्रत्येक आदेश मनुष्य को यह बताता है कि उसे अमुक कर्म करना चाहिये अथवा नहीं करना चाहिये। इससे स्पष्ट है कि आदेश में किसी न किसी प्रकार की **अनिवार्यता** या **बाध्यता आवश्यक** है।

कान्ट के विचार में निरपेक्ष आदेश ही एकमात्र **नैतिक आदेश** है और इसकी **बाध्यता बाह्य** (External) न होकर आन्तरिक (Internal) ही होती है।

→ ईश्वर का संकल्प (God's will) – Holy will (पवित्र संकल्प)।

→ मनुष्य का संकल्प (Men's Will) – Good will (शुभ संकल्प)।

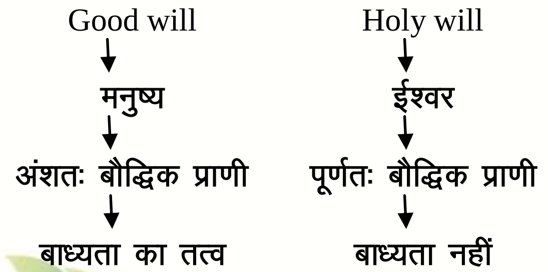
निरपेक्ष आदेश का आधार शुभ संकल्प (Good will) है, अर्थात् इन आदेशों के पीछे जो संकल्प होता है, वह शुभ होता है। 'शुभ संकल्प' विशुद्ध कर्त्तव्य चेतना पर आधारित होता है। **कर्त्तव्य चेतना की भावना से प्रेरित संकल्प ही शुभ संकल्प है।** इसका उद्गम **बुद्धि** से होता है। (Self imposed)। स्पष्ट है कि निरपेक्ष आदेश या अहेतुक आदेश का नीतिशास्त्र शुभ संकल्प की अभिव्यक्ति है।

Categorical Imperative (निरपेक्ष आदेश)	**Characteristics (विशेषता)**
– It is the nature of Command (यह अज्ञान स्वरूप होता है)	✓
– It is universal (यह सार्वभौम होता है)	✓
– It is the command of reason (यह बुद्धि का आदेश होता है)	✓
– It is the expression of goodwill (शुभ संकल्प की अभिव्यक्ति है)	✓
– It produces happiness (यह सुख उत्पन्न करता है)	×

* ....**जैकोबी** के अनुसार ''कान्ट के दर्शन में मनुष्य नियम के लिये बना दिया गया है, नियम मनुष्य के लिये नहीं''।
* **महत्व (Importance of Good will)** : केवल शुभ संकल्प ही एक मात्र स्वतः साध्य शुभ है या अपने आप में शुभ है। यह अप्रतिबंधित शुभ है (Unqualified Good)। दूसरे शब्दों में शुभत्व देश, काल, परिस्थिति और उससे उत्पन्न परिणाम पर निर्भर नहीं करता।

→ A good will is good in itself and like a jewel shines by its own light.

* शुभ संकल्प नैतिक दृष्टिकोण से उच्चतम शुभ है, परन्तु उच्चतम होते हुये भी वह **पूर्ण–शुभ** नहीं है। Perfect Good या Complete Good नहीं है। Perfect Good या Complete Good में शुभ संकल्प के साथ–साथ **आनन्द** भी सम्मिलित होता है। Perfect Good या Complete Good = Virtue + Happiness.
* शुभ संकल्प में सद्‌गुण है, परन्तु आनन्द नहीं है।
* व्यक्ति के शुभ संकल्प या सद्‌गुण के अनुपात में आनन्द का समावेश पूर्ण शुभ की स्थिति में होता है और यह **समावेश ईश्वर करता** है।
* इस संसार में या इसके बाहर ....को छोड़कर अन्य किसी चीज की कल्पना असम्भव है, जिसे बिना किसी शर्त के शुभ समझा जा सके।
* "It is impossible to even out of it which can be taken as good without qualification except good will".
* विश्व में शुभ संकल्प के अतिरिक्त अन्य वस्तुएँ भी शुभ है, परन्तु वे अपने आप में शुभ नहीं है। उनका शुभत्व देश–काल, परिस्थिति, परिणाम आदि पर निर्भर करता है।
* **कर्त्तव्य का स्वरूप : शुभ संकल्प का कर्त्तव्य के साथ अनिवार्य सम्बन्ध है।** मनुष्य में शुभ संकल्प की अभिव्यक्ति स्वतः नहीं हो पाती, बल्कि इसका आधार कर्त्तव्य की **चेतना** होती है। कर्त्तव्य की चेतना में (sense of duty) बाध्यता का तत्व रहता है।
* मनुष्य पूर्णतः बौद्धिक प्राणी नहीं है। वह भावनाओं, इच्छाओं, संवेगों, प्रवृत्तियों आदि से प्रभावित होता है। मनुष्य के इस प्रकार के स्वभाव के कारण शुभ संकल्प की स्वतः शुभ कर्मों में अभिव्यक्ति नहीं होती है। उसे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जिन पर विजय पाने के लिये मनुष्य में कर्त्तव्य की चेतना का रहना अनिवार्य है। इस कर्त्तव्य की चेतना में बाध्यता का तत्व रहता है।
* केवल अंशतः बौद्धिक प्राणी होने के कारण मनुष्य कर्त्तव्य की चेतना से बाध्य होकर शुभ–संक्लप के अनुरूप कर्म करना पड़ता है। पूर्णतया बौद्धिक प्राणी के संकल्प को 'पवित्र संकल्प' (Holy will) कान्ट के द्वारा कहा गया है। ऐसा पवित्र संकल्प केवल ईश्वर में होता है।



शुभ कर्मों में स्वतः अभिव्यक्ति नहीं | **शुभ कर्मों में स्वतः अभिव्यक्ति**

* **नैतिकता का मूल आधार : कर्त्तव्य की चेतना ही नैतिकता का मूल आधार है। मनुष्य के केवल उसी कर्म का नैतिक मूल्य है, जो उसकी कर्त्तव्य चेतना पर आधारित है।**
* कान्ट ने मानवीय कर्म को तीन भागों में बाँटा है :

1. तत्कालीन–इच्छा, संवेग या Self Interest से किया गया कर्म।
2. दुसरे के हित या कल्याण के लिये **सोच समझकर** किया जाने वाला कर्म। (दुसरे के कल्याण से सम्बन्धित)।
3. कर्त्तव्य की चेतना से प्रेरित कर्म : इन्हीं **कर्मों का नैतिक मूल्य** है।

* **कर्त्तव्य के दो प्रकार के भेद है :**

1. **पूर्ण बाध्यता मूलक कर्त्तव्य** : ये वे कर्म हैं, जो राजकीय कानून द्वारा नियंत्रित होते हैं। ये निश्चित, स्पष्ट और भ्रमरहित होते हैं। जैसे : चोरी नहीं करना, हत्या नहीं करना।
2. **अपूर्ण बाध्यता (Imperfect Duty) सम्बन्धित कर्त्तव्य** : ये कर्त्तव्य जो राजकीय कानून द्वारा **नियंत्रित न होकर व्यक्ति की इच्छा, देश और काल पर निर्भर** करते हैं। जैसे : **दया, दान** आदि।

* **नैतिकता का प्रयोजन** : नैतिकता का प्रयोजन हमें सुख प्रदान करना नहीं है, बल्कि नैतिकता का लक्ष्य हमें सुख प्राप्त **करने के योग्य बनाना है**।
* **कान्ट : ''दो चीजों के प्रति प्रशंसा तथा भय मिश्रित श्रद्धा का भाव उत्पन्न होता है। पहला ऊपर जगमगाता आकाश दूसरा अन्तस्थ नैतिक नियम''।**
* **अन्तरात्मा में आस्था** : कान्ट के अनुसार, ''भूल करने वाली आत्मा एक **मरीचिका (Chimera)** मात्र है। मानव की अन्तरात्मा उसको भूल करने में सदैव रोकती है। **नैतिक अपराध उस अन्तरात्मा की आवाज को न सुनने के कारण** होते है। कान्ट के इस मत का समर्थक **गाँधी** ने किया है।

* **नैतिकता की पूर्व मान्यताएँ :** नैतिक जीवन के कुछ आधारभूत तत्व हैं, जिनके बिना नैतिक जीवन का सरलतापूर्वक **संचालन करना अत्यन्त कठिन होता,** भ्रममात्र होता अथवा दुर्बोध होता। इन आधारभूत तत्वों को **नैतिक मान्यताएँ** या **नैतिकता की मान्यताएँ** कहा जाता है। कान्ट ने सर्वप्रथम नैतिकता की तीन मान्यताओं की स्पष्ट व्याख्या तथा पुष्टि की। ये तीन मान्यताएँ आत्मा की अमरता, स्वतंत्रता तथा ईश्वर–सत्ता की मान्यता हैं। ये **मान्यताएँ तर्कसिद्ध सिद्धान्त नहीं** है, किन्तु पूर्वकल्पनाएँ (Presumptions) हैं, जो व्यावहारिक दृष्टिकोण से अनिवार्य है। यद्यपि ये हमारे बौद्धिक ज्ञान का विस्तार नहीं करती तथापि व्यवहार के प्रसंग में ये बुद्धिस्थित प्रत्ययों (अमरता, स्वतंत्रता और ईश्वर के प्रत्ययों) को सामान्यतया विषयगत अस्तित्व प्रदान करती हैं। वास्तव में ये ही अमरता, स्वतंत्रता और ईश्वर–सत्ता को प्रत्यय होने का अधिकार देती है, जिनकी सम्भावना भी अन्यथा स्थापित नहीं की जा सकती। इस प्रकार आत्मा की अमरता, संकल्प की स्वतंत्रता और ईश्वर–सत्ता की सिद्धि नैतिकता की पूर्व मान्यताओं के आधार पर होती हैं।

प्रायः यह माना जाता है कि प्रत्येक विज्ञान की कुछ पूर्व मान्यताएँ हैं। किन्तु नैतिकता की पूर्व मान्यताओं और विज्ञान की पूर्व मान्यताओं में कुछ अन्तर है। विज्ञान की पूर्व मान्यता केवल उसके मुख्य विषय की व्याख्या के लिये है और उसका जीवन तथा व्यवहार से कोई सम्बन्ध नहीं है, किन्तु **नैतिकता की पूर्व मान्यताएँ वास्तव में वे सत्य हैं, जिनसे मनुष्य जीते हैं।** यदि वे भ्रम या असत्य हो जाएँ तो वस्तुतः मानव का जीना बन्द हो जाए।

कान्ट के अनुसार नैतिकता की तीन पूर्व मान्यताए (Postulates of Morality) **:**

- आत्मा की अमरता।
- ईश्वर का अस्तित्व।
- संकल्प स्वातन्त्र्य।

* यहाँ **नैतिकता की पूर्णता के लिये** इन तीन अवधारणाओं को स्वीकार किया गया है।

- ''तुम्हें यह करना चाहिये। अतः तुम यह कर सकते हो'' – (आत्म–निर्धारणवाद)।
- (हमारा यह कर्त्तव्य है, अतः हम यह कह सकते हैं)।

* **कुछ प्रमुख तथ्य :**

- कान्ट उचित को शुभ से अधिक श्रेष्ठ मानता है। उचित का सम्बन्ध कर्त्तव्य से है और वे कर्त्तव्य के लिये कर्त्तव्य की अवधारणा पर जोर देते है।
- नैतिक नियम निरपेक्ष आदेश हैं। यह व्यावहारिक बुद्धि का आदेश है।
- The internal law of conscious or practical reason is the ultimate moral standard.

* **नैतिक नियम :**

- व्यावहारिक बुद्धि का आदेश है।
- बाह्य आरोपित न होकर आत्मारोपित है।
- Autonomous है।
- Practical reason लागू करता है।
- Reason based है।
- आन्तरिक है, बाह्य आरोपित नहीं।
- ईश्वरीय आदेश नहीं है।
- परिणाम सापेक्ष नहीं है।

* Good will is reasoned will.
* Reason is the universal element in human nature it imposed moral laws upto itself. Itself legislative.
* बुद्धि सभ मनुष्यों में विद्यमान सार्वभौम तत्व है। यही तत्व निरपेक्ष आदेश को स्वयं के ऊपर लागू करता है। यह स्व–संचालित है।
* कान्ट ने **फन्डामेन्टल प्रिंसिपल ऑफ द मेटाफिजिक्स ऑफ मोरल्स** में मानव जीवन के दैनिक व्यवहार को नियमित करने के लिये पाँच सूत्र दिये हैं :

1. **सार्वभौमिकता का नियम :** प्रत्येक मनुष्य को केवल ऐसे नियम के अनुसार कार्य करना चाहिये, जिसे वह सार्वभौमिक रूप में स्वीकार करने का संकल्प कर सके। जैसे कि : वचन भंग करना, आत्महत्या को **सार्वभौम आदेश** का रूप प्रदान नहीं किया जा सकता। ("Act only on that maxim through which you can at the same time will that it should become a universal law.")
2. **प्राकृतिक नियम का सूत्र :** ऐसा कीजिये कि मानो **आपके कर्म का नियम आपकी इच्छा के माध्यम** से प्रकृति का एक सार्वभौम नियम होने वाला हो। ("Act as if the maxim of your action were to become through your will a universal law of nature.)
3. **मनुष्यता को साध्य मानने का नियम :** इस प्रकार कर्म करो कि मानवता चाहे हमारे अन्दर हो या अन्य के, वह साधन मात्र न रहकर सदैव अपने आप में साध्य बनी रहे। जैसे : आत्मदाह। ("So act to use humality, both in your own person and in the person of every other, always at the same time as an end, never simply as a means.)
4. **स्वाधीनता का नियम :** इस प्रकार कार्य करो कि तुम्हारा संकल्प अपने आप को सार्वभौमिक नियम का विधायक समझ सके। ("So act that your will can regard itself at the same time as making universal law through its maxim.")
5. **साध्यों के राज्य का नियम :** इस प्रकार कार्य करो कि तुम अपने आपको साध्यों के राज्य का नियम विधायक सदस्य समझ सके। ("So act as if you were always through your maxim a law-making member in a universal kingdom of ends.")

भगवद्गीता : स्वधर्म, निष्काम कर्मयोग
पुरूषार्थ : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष

- श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है। यह **उपनिषदों का सार** है। भारतीय संस्कृति की आत्मा है। गीता के रचयिता **महर्षि वेदव्यास** है।
- भगवद्गीता को संक्षेप में गीता कहा जाता है। यह भगवान कृष्ण का उपदेश है। यह महाभारत के भीष्म–पर्व के **25वें से 42वें अध्याय तक का भाग** है। यह मूलतः संस्कृत में है और इसमें **18 अध्याय** है। इसमें कुल 700 श्लोक है।
- गीता को **योग शास्त्र** भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ योग एवं आचार को विशेष महत्व दिया गया है। यहाँ प्रत्येक अध्याय के अन्त में कहा गया है : ''ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे''।
- गीता के अनुसार **योग का अर्थ** है : **जीवात्मा का परमात्मा से मिलना**। यहाँ इसके साधन के रूप में ज्ञान, कर्म और भक्ति को स्वीकार किया गया है।
- गीता में **योग के तीन प्रकार :**

1. ज्ञान योग : शंकर।
2. कर्मयोग : तिलक (गीता रहस्य)।
3. भक्ति योग : रामानुज।

- गीता के प्रमुख **भाष्यकार या व्याख्याकार :**

* प्राचीन काल में : शंकर, रामानुज, मध्वाचार्य।

* आधुनिक काल में : गाँधी, तिलक, श्रीमति एनी बेसेन्ट, विनोबा भावे, श्री अरविन्द।

* राजनयिक : राधाकृष्णनन।

* क्रांतिकारी : बाल गंगाधर तिलक (कर्मयोग की प्रधानता)।

- योगेश्वर कृष्ण के अनुसार, कर्मों में कुशलता ही योग है : **''योगः कर्मषु कौशलं''**।
- गीता में अनासक्त एवं सिद्ध पुरूष को **'योगी', 'स्थितप्रज्ञ' या 'त्रिगुणातीत'** कहा गया है।
- **स्थितप्रज्ञ का अर्थ है :** दैवी प्रज्ञा में स्थित : (स्थितप्रज्ञ) अर्थात् जिसको प्रत्येक समय प्रत्येक क्रिया, प्रत्येक जीव में ईश्वर दिखाई दे, अर्थात् सभी अवस्थाओं में ईश्वर से तादात्म्य रखे। (Identical Relation) यहाँ स्थित का अर्थ **स्थिर** और प्रज्ञा **बुद्धि** का नाम है, अर्थात् **जिसकी बुद्धि अपने कर्त्तव्य पर स्थिर या दृढ़ हो गयी हो, वही स्थितप्रज्ञ है।**
- **लोक–संग्रह क्या है :** गीता के अनुसार लोक संग्रह का आशय है, सम्पूर्ण लोक अर्थात् **सम्पूर्ण समाज के लिये कार्य करना।** यही भगवद्गीता का सर्वोच्च **सामाजिक आदर्श** है। यही मुक्ति का द्वार है।
- नीति के आध्यात्मिक आधार पर मानव के कर्त्तव्य का क्रमानुसार निर्णय :

(1) स्वभाव → स्वधर्म → स्वकर्म।

- स्वधर्म एवं स्वभाव में सहज सम्बन्ध है, जो आध्यात्मिक दृष्टि से **स्वधर्म** है, वहीं व्यावहारिक दृष्टि या सामाजिक दृष्टि से **'स्वकर्म'** हो जाता है।
- बुद्धियोग का अर्थ है : राग–द्वेष से रहित शुद्ध अनासक्त कर्त्तव्य बुद्धि।
- **स्वधर्म :** गीता में **निष्काम भाव** से कर्म करने का उपदेश दिया गया है। इसके लिये **स्वधर्म** का पालन आवश्यक है। **'स्वधर्म'** का अर्थ है : अपना–अपना धर्म या अपना निर्धारित कर्त्तव्य। गुण और कर्म के आधार पर जो प्रकार के वर्णों की रचना हुई है, उन वर्णों के लिये निर्धारित कर्म करना ही स्वधर्म है। इसे ही सहज धर्म, स्वकर्म, नियत कर्म, स्वभाव कर्म, स्वभाव नियत कर्म आदि कहा गया है। स्पष्ट है कि यहाँ **'धर्म'** शब्द कर्म या **कर्त्तव्य** के रूप में प्रयुक्त हुआ है। गीता के अनुसार : स्वधर्म का अर्थ 'वर्ण–धर्म' और 'आश्रम धर्म' है। स्पष्ट है कि **मनुष्य द्वारा अपने वर्ण के अनुरूप निर्धारित कर्मों का निष्काम भाव से पालन करना ही स्वधर्म है।** गीता स्वधर्म के सम्पादन का आध्यात्मिक मूल्य भी स्पष्ट करती है। इसके अनुसार स्वधर्म का पालन करने से **मनुष्य सिद्धि को प्राप्त करता** है। मोक्ष का अधिकारी बनता है। वस्तुतः गीता द्वारा स्वधर्म के प्रतिपादन का लक्ष्य यह था कि समाजव्यवस्था एवं सृष्टि की गति अबाध रूप से चलती रहे, लोककल्याण होता रहे तथा समाज में अधिकारों के लिये कोई संघर्ष न हो। आधुनिक युग में जबकि लोग अपने कर्त्तव्यों को भूलकर अधिकारों के लिये लड़ रहे हैं, गीता द्वारा अपने कर्त्तव्यों के पालन का आदेश और भी अधिक **समीचीन** हो गया है।
- **निष्काम कर्म :** निष्काम कर्म को **कर्मयोग** भी कहते है। निष्काम कर्म प्रवृत्ति और निवृत्ति के बीच, कर्मवाद और सन्यास के बीच, सुन्दर सामंजस्य स्थापित करता है। प्रवृत्ति का आदर्श कर्म का आदर्श है, सुख का आदर्श है। निवृत्ति का आदर्श, **वैराग्य का आदर्श** है। जो सभी कर्मों के **परित्याग** एवं **सांसारिक सम्बन्धों से विमुख होने** का समर्थक है। गीता के अनुसार कर्म करना ही मनुष्य के अधिकार में है। कर्म का फल मनुष्य के अधिकार में नहीं है। मनुष्य को कर्मफल की वासना से कर्म नहीं करना चाहिये। साथ–ही–साथ **अकर्मण्यता भी नहीं आनी चाहिये**। तात्पर्य यह है कि मनुष्य की **कर्त्तव्य –भावना से प्रेरित होकर कर्म करना चाहिये, कर्मफल की भावना से प्रेरित होकर नहीं।** कर्मफल पर कर्ता का पूर्ण अधिकार नहीं होता। फल की कामना किये बिना मात्र कर्त्तव्य समझकर कर्म करना ही **कर्मयोग** है। अपने सभी कर्मों तथा उनके परिणामों को ईश्वर को अर्पित कर **अनासक्त भाव से कर्म करना ही निष्काम कर्म है।** निष्काम कर्म

का सिद्धान्त बतलाता है कि मनुष्य को कर्त्तव्य–बुद्धि से कर्म करना चाहिये, **फल–बुद्धि से नहीं।**

गीता के निष्काम कर्मयोग की उपयोगिता आज भी **निर्विवाद** है। कर्म को अकर्म से श्रेयस्कर बताते हुये निष्काम भाव से कर्त्तव्य–कर्म के सम्पादन का आदेश गीता की अपनी सार्वभौम विशेषता है। वर्तमान भारतीय परिवेश में, जबकि **सर्वत्र भ्रष्टाचार** और **अनाचार का बोलबाला** है, निष्काम कर्मयोग की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

- **पुरूषार्थ :** 'पुरूषार्थ' का अर्थ है : पुरूष या मनुष्य का लक्ष्य। भारतीय नीतिशास्त्र जीवन के चार उद्देश्यों को स्वीकार करता है। ये चार उद्देश्य या पुरूषार्थ है : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनमें मोक्ष सर्वोच्च पुरूषार्थ है। अन्य तीन पुरूषार्थ इस परम लक्ष्य की प्राप्ति के **साधन** है। यह इस प्रकार है।

* **धर्म :** 'धर्म' संस्कृत के 'धृ' धातु से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है, **धारण करना,** अर्थात् जो संसार को धारण करे, वह धर्म है। महाभारत में धर्म की परिभाषा धारण करने के अर्थ में की गयी है। **धर्म प्रजा को धारण करता है।** कणाद ने धर्म के सम्बन्ध में लिखा है कि जिससे **अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति हो,** वह धर्म है। मनु ने लिखा है आचार सर्वश्रेष्ठ धर्म है। महात्मा गाँधी भी नैतिकता को ही धर्म मानते हैं। धर्म मनुष्य के उन सभी कर्त्तव्यों की समष्टि है, जिसके द्वारा मनुष्य इस संसार में **मानवोचित जीवन व्यतीत कर सकता है।**

* **अर्थ :** पुरूषार्थों में 'अर्थ' को दूसरा स्थान दिया गया है। मनुष्य को जीवन में 'अर्थ' का महत्व स्वीकार किया गया है। लौकिक जीवन व्यतीत करने के लिये अर्थ की आवश्यकता होती है। 'अर्थ' का तात्पर्य **धन–सम्पत्ति, भौतिक उपकरण और सुख के साधन से है।** इससे सभी प्रयोजनों की सिद्धि होती है। **कौटिल्य ने कहा है कि अर्थ ही धर्म और काम का मूल है।** इसी कारण **भतृहरि** कहते हैं कि अर्थ सभी गुणों की खान है। **धन से ही धर्म भी सम्भव है।** महात्मा गाँधी कहते हैं कि धनोपार्जन शुभ साधनों के द्वारा ही करनी चाहिये, अशुभ साधनों के द्वारा नहीं। पुनः भारतीय आचारशास्त्र आवश्यकता भर ही धन–संचय का आदेश देता है। आवश्यकता से अधिक धन संचय करने वाला मोक्ष की प्राप्ति नहीं कर सकता।

* **काम :** भारतीय आचारशास्त्र में 'काम' को तीसरा पुरूषार्थ माना गया है। वात्स्यायन ने **'काम'** शब्द के दो अर्थों का संकेत किया है, विस्तृत अर्थ और संकुचित अर्थ। विस्तृत या व्यापक अर्थ में 'काम' शब्द का प्रयोग **सभी इन्द्रियों से प्राप्त सुख के लिये होता है।** महाभारत में इसी अर्थ में 'काम' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'कामसूत्र' में कहा गया है कि अभिमान सहित रस से ओत–प्रोत सभी इन्द्रियों का आनन्द जिससे उत्पन्न होता है, वही काम है। संकुचितअर्थ में 'काम' शब्द का प्रयोग यौन सुख के लिये किया गया है। यौन–सुख के दो अंग है : यौनसुख की प्राप्ति और संतान की उत्पत्ति। दूसरा अंग बड़ा महत्वपूर्ण है, क्योंकि संसार की परम्परा इसी से चलती है। भारतीय नीतिशास्त्र में यौनसुख को अनैतिक नहीं माना गया है। तात्पर्य यह है कि व्यक्ति और समाज दोनों के सामंजस्यपूर्ण उन्नयन के लिये **धर्म सम्मत रूप से काम की प्राप्ति** अपेक्षित है। धर्म सम्मत काम को ही पुरूषार्थ माना गया है।

* **मोक्ष :** 'मोक्ष' चौथा और अंतिम पुरूषार्थ है। **यह मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है।** यह **सर्वश्रेष्ठ मूल्य** है। इसी कारण से इसे **निःश्रेयस** भी कहते है। 'मोक्ष' शब्द की उत्पत्ति 'मुक्' धातु से हुई है, जिसका तात्पर्य **मुक्त करना** है। अतएवं मोक्ष का अर्थ आत्मा की मुक्ति है। मोक्ष के लिये मुक्ति, निर्वाण, कैवल्य आदि शब्दों का भी प्रयोग होता है।

भारतीय आचारशास्त्र की मान्यता है, कि संसार में मानव जीवन दुःखपूर्ण है। इस दुःख का कारण बंधन है। आवागमन के चक्र में फँसा रहना ही बंधन है। इस बंधन से मुक्त होना ही मोक्ष है। गीता में कहा गया है कि यह लोक कर्म बन्धन जन्म है। **बंधन का मूल कारण अज्ञान है।** अतः ज्ञान से ही **मोक्ष** की प्राप्ति सम्भव है। यह ज्ञान साधारण ज्ञान नहीं है, बल्कि **तत्व–ज्ञान** या **आत्म–ज्ञान** है। प्रायः प्रत्येक भारतीय दर्शन में तत्व–ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग प्रस्तुत किया गया है।

मोक्ष दो प्रकार का माना गया है : जीवन मुक्ति और विदेह मुक्ति। इस संसार में इस शरीर को धारण किये हुये जो मोक्ष मिलता है, उसे **जीवन–मुक्ति** कहते हैं। जब जीवनमुक्त शरीर का त्याग कर देता है, तो उसे जिस मोक्ष की प्राप्ति होती है, उसे **विदेह–मुक्ति** कहते है।

इस प्रकार देखते हैं कि जीवन के चार लक्ष्य (चार पुरूषार्थ) मानवीय प्रकृति के विभिन्न पक्षों का संकेत करते हैं : स्वाभाविक और संवेगात्मक, आर्थिक, बौद्धिक तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक।

- नीति का उच्चतम आदर्श गीता के कर्मयोग के सिद्धान्त में पाया जाता है। **आत्मसिद्धि के लिये कर्म–मार्ग ही सुलभ एवं श्रेयस्कर है।**
- गाँधी के अनुसार **अनासक्ति योग** गीता का मूल तत्व है, इसका अर्थ है : **सांसारिक विषय सुख से आसक्ति हटाकर आध्यात्मिक विकास की चेष्टा।** गाँधी द्वारा गीता पर लिखे गये भाष्य का नाम **'अनासक्ति योग'** है।
- **वर्णाश्रम धर्म :** मनु के अनुसार, वर्णाश्रम धर्म विशिष्ट या विशेष धर्म है। इनका आधार मनुष्य की विशिष्ट **योग्यता** एवं **पात्रता** है।

* **वर्ण :** मनुष्य की प्रकृति (गुण, कर्म, स्वभाव) के आधार पर वर्ण का निर्धारण होता है। चार वर्ण हैं : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र।
* **आश्रम :** मनुष्य के व्यक्तिगत संस्कार या जीवन के **विकास क्रम** में उसकी **स्थिति के अनुसार** आश्रम धर्म की व्यवस्था की गई है। आश्रम चार हैं : ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास।

वर्ण एवं आश्रम के अनुसार किये गये कर्म ही **वर्णाश्रम धर्म** है। सम्पूर्ण सामाजिक कर्त्तव्यों के विवेचन का आधार : वर्णाश्रम धर्म ही हैं।

- **आपद धर्म :** किसी आकस्मिक या असाधारण परिस्थिति में अपने अस्तित्व रक्षा या पुनर्विकास हेतु व्यक्ति को **धर्मशास्त्रों** से ऐसी छूट मिली हैं कि वह अपने **विशिष्ट कर्त्तव्यों का निर्वाह कुछ समय के लिये स्थगित कर दे**, दूसरे वैकल्पिक कर्त्तव्य करे, परन्तु विकल्प भी धर्मशास्त्र–सम्मत होना चाहिये, परन्तु **सामान्य ज्ञान** के पालन के सम्बन्ध में कोई छूट नहीं थी। इसका पालन तो प्राणों को संकट में डालकर भी करना चाहिये।
- गीता में कर्म का विभाजन :

1. कर्म, अकर्म, विकर्म।
2. सात्विक, राजसिक और तामसिक कर्म।
3. प्रारब्ध, संचित, संचयीमान।
4. सकाम और निष्काम कर्म।

- गीता में **कर्म के दो मुख्य प्रकार** हैं : (1) सकाम कर्म (आसक्त कर्म), (2) निष्काम कर्म (अनासक्त कर्म)। सकाम कर्म वह है, जो शारीरिक सुख या लौकिक सुख अर्थात् **फल प्राप्ति** की कामना से किया जाता है, जबकि निष्काम कर्म कामनारहित कर्म है। कर्मफल आसक्ति से रहित होकर किया जाने वाला कर्त्तव्य ही निष्काम कर्म है। सकाम कर्म **बन्धन** का कारण है, जबकि निष्काम कर्म **तृष्णा रहित कर्म** है। ऐसे कर्म से बंधन नहीं होता। **निष्काम कर्म को ही गीता में कर्मयोग कहा गया है। गीता निष्काम कर्म का संदेश देती है।**
- गीता के अनुसार **प्रत्येक कर्म के पाँच घटक** होते हैं : अधिष्ठान, कर्ता, करण (इन्द्रियाँ), चेष्टा और दैव (ईश्वरीय–शक्ति)।
- **दैवी सम्पदा एवं आसुरी सम्पदा :** गीता में **धर्म** को दैवी–सम्पदा माना गया है, अर्थात् **सद्गुण** माना गया है, जबकि अधर्म को आसुरी सम्पदा माना गया है। दैवी सम्पदा (अभय, अन्तः करण की स्वच्छता, सत्य, अक्रोध, शान्ति, क्षमा, तेज, सब प्राणियों में दया, स्वाध्याय, अनासक्त–भाव आदि) से **मुक्ति** की प्राप्ति होती है, जबकि आसुरी सम्पदा (पाखंड, घमंड, क्रोध, परनिन्दा, मिथ्या भाषण, कटु वचन, अन्तः करण की अशुद्धि आदि) से **बंधन** होता है।
- **गीता में उपदेश है :**

– निष्काम कर्म का, कर्मफल निरपेक्षतावाद का समर्थन है।
– 'प्रवृत्ति में निवृत्ति' का,
– सर्वांगपूर्णतावाद का,
– समत्व–योग का।

* **निष्काम कर्म :**

क्या है ?	क्या नहीं है ?
– कामना रहित कर्म है। (Disintegrated Action) – प्रवृत्ति में निवृत्ति। – अनासक्त कर्म। – तृष्णा रहित कर्म। – ईश्वरार्थ कर्म। – कर्मफल का त्याग।	– कर्म संन्यास (निवृत्ति)। (Disintegrated Action) – प्रवृत्ति से निवृत्ति। – कर्म का त्याग (नैष्कर्म्य)। – केवल **काम्य** कर्मों का त्याग। – केवल निषिद्ध कर्मों का त्याग नहीं। – निष्क्रियता (अकर्मण्यता)। – कर्म का त्याग।

* निष्काम कर्म के **दो लक्ष्य** हैं :

1. **कर्तापन या ममता का त्याग** : किसी भी कायिक कर्म या मानसिक कर्म में कर्तृत्व का अभाव (मैं इस कर्म का कर्ता हूँ – इसका अभाव)।
2. **आसक्ति या तृष्णा का त्याग :** कामना का अभाव या **कर्म के फल से** आसक्ति को हटाना।

* कर्तापन का अभाव कब ?

– जब मनुष्य समझे कि कर्म तो प्रकृति के **गुणों** द्वारा किये जाते हैं। इसीलिये ज्ञानी व्यक्ति सभी **कर्मों** को प्रकृति के गुणों द्वारा ही **कृत** मानता है। हम अहंकार के कारण **स्वयं** को कर्ता मानने लगते हैं। वास्तव में प्रकृति के गुण ही कर्ता है।
– प्रकृति के तीन गुण : सत्व, रज्, तम्।
– निष्काम कर्म **सुखवाद** और **वैराग्यवाद** के बीच का मार्ग है।

* **स्थितप्रज्ञ :**

– सभी अवस्थाओं में ईश्वर से तादात्म्य।
– प्रज्ञा में स्थित (Stable Intellect)।
– जो व्यक्ति राग, द्वेष, मोह एवं कर्म–फलासक्ति से रहित होकर **निष्काम भाव** से **अपने चित्त** को ईश्वर में लगाता है। इन्द्रियों को अपने **वश** में कर ममता रहित एवं अहंकार रहित होकर परम शान्ति को प्राप्त करता है, वह स्थितप्रज्ञ है। यही स्थिति **'ब्राह्मी स्थिति'** हैं।
– स्थितप्रज्ञ के जो लक्षण बताये गये हैं, वे जीवन मुक्त पुरूष के भी **लक्षण** हैं। वह सुख–दुःख में समस्थित तथा सभी प्राणियों से **मित्रता** रखने वाला होता है।

- Self Control (Not surprising desire but systemizing all desire –इच्छाओं का दमन नहीं अपितु इच्छाओं का व्यवस्थीकरण है)।
- गीता में स्थितप्रज्ञ की अवधारणा बौद्ध–दर्शन के **बोधिसत्व** के आदर्श के समान है।
- गीता में ज्ञान योगी को **'समदर्शी'** कहा गया है, क्योंकि यह सारे प्राणियों को **समभाव** से देखता है।
- 'लोकसंग्रह' अर्थात् सामाजिक कल्याण की बात की गई है।
- गीता में व्यावहारिक **नैतिकता** के स्तर पर लोकसंग्रह अर्थात् सामाजिक कल्याण को परम पुरूषार्थ माना गया है।
- गीता में योग को 'समत्व' कहा गया है, जिसमें व्यक्ति सभी अवस्थाओं में स्वभाव से ब्राह्मी स्थिति में बना रहता है।
- ज्ञान योग की सबसे बड़ी विशेषता समत्व–योग है। गीता के अनुसार समत्व–योग के तीन प्रकार है :

1. आत्मगत समत्व।
2. वस्तुगत समत्व और
3. गुणातीत समत्व।

- **गीता और कान्ट में अन्तर :**

1. गीता प्रयोजनवादी है, जबकि कान्ट का नीतिशास्त्र **नियमवादी (Rural)** है।
2. गीता के अनुसार नैतिक नियम **ईश्वर** से निकलते हैं।
3. गीता भावनाओं का **बहिष्करण** नहीं करती, बल्कि **रूपान्तर** और **दैवीकरण** पर जोर देती है। दूसरी तरफ कान्ट **नियमवादी** है।
4. कान्ट भावनाओं का पूर्ण बहिष्कार करते है। नैतिक नियम ईश्वरीय आदेश **नहीं** है।
5. गीता स्वकर्त्तव्य (स्वधर्म) को कर्त्तव्य और श्रेय (उच्चतम आध्यात्मिक तत्व) का समन्वय मानती है।
6. निष्काम कर्म में वर्णाश्रम धर्म का उपदेश निहित है।
7. चार वर्ण के **निर्धारण** का आधार : गुण, कर्म और स्वभाव।
8. स्वधर्म के निर्धारण का आधार : वर्णकर्म।
9. वर्णधर्म : वर्ण एवं आश्रम के अनुसार **कर्म**।
10. कमयोगी के लिये **स्वकर्म** ही स्वधर्म है।
11. गीता में सबसे पहले चार वर्ण की बात की गयी है।
12. गीता के अनुसार भक्ति के नौ प्रकार (नवधा भक्ति) माने गये हैं।
13. गीता में **चार प्रकार के भक्तों** को स्वीकार किया गया है। ये हैं : **अथार्थी, आर्त्त, जिज्ञासु और ज्ञानी**। यहाँ ज्ञानी भक्त को श्रेष्ठ माना गया है।

- श्रीमद्भगवत् गीता में भक्तों के चार प्रकार बताये गये हैं :

* **अर्थार्थी :** अर्थ अथवा लाभ की इच्छा से भजन करने वाला भक्त अर्थी– अर्थी कहलाता है।
* **आर्त्त :** दु:ख निवारण के लिये **भजन** करने वाला भक्त आर्त्त कहलाता है।
* **जिज्ञासु :** भगवान के **स्वरूप** को जानने के लिये भजन करने वाला भक्त **जिज्ञासु** कहलाता है।
* **ज्ञानी :** भगवान के स्वरूप को जानकर उनका **चिन्तन करने वाला** भक्त ज्ञानी कहलाता है।

- भक्ति **दो प्रकार** की होती है :

* **पराभक्ति :** जिसका उद्देश्य केवल भक्ति है और जिसके बदले भक्त को कुछ नहीं चाहिये।
* **अपराभक्ति :** जो भक्ति साधन के रूप में, फल–प्राप्ति की इच्छा से की जाती है, उसे अपराभक्ति कहते हैं।

- गीता में **दो प्रकार की गतियों** का उल्लेख है :

1. **परागति** अर्थात् मोक्ष।
2. **अपरागति** अर्थात् कर्म भोग के लिये संसर में पुन: जन्म लेना अपरागति है।

- महात्मा गाँधी और आचार्य विनोबा ने गीता को **माता** की संज्ञा दी है।
- गीता में **आत्मलाभ** को सभी लाभों से श्रेष्ठ बताया गया है।
- गीता की व्याख्या विभिन्न प्रकार से की गई है।

* **शंकर** : ज्ञानमार्ग
* **तिलक** : कर्ममार्ग
* **अरविन्द** : पूर्णयोग
* **रामानुज** : भक्तिमार्ग
* **गाँधी** : अनासक्तियोग

- **महाभारत** : **"अहिंसा परमो धर्म:"**, अहिंसा ही परमधर्म है।
- **गीता मतानुसार ज्ञान क्या है ?**

गीता मतानुसार सांसारिक विषय–वासना और ममत्व से परे प्रत्येक प्राणी को **परमात्म स्वरूप, समान भाव से देखना** ही ज्ञान का लक्ष्य है।

- **गीता में निवृत्ति और प्रवृत्ति का समन्वय** : गीता का निष्काम कर्मयोग दो आदर्शों : **'निवृत्ति'** और **'प्रवृत्ति'** के बीच समन्वय प्रस्तुत करता है। समस्त कर्मों से सन्यास ले लेना और समाज से सम्बन्ध विच्छेद कर लेना निवृत्ति का आदर्श है। प्रवृत्ति का आदेश समाज में रहते हुये **कर्म करना** है। गीता इन दोनों के बीच **निष्काम कर्मयोग** के माध्यम से समन्वय लाती है। कर्मफल के प्रति अनासक्ति या त्याग निवृत्ति का प्रतीक है और लोकहित को ध्यान में रखकर कर्म करते रहना प्रवृत्ति का द्योतक है। गीता का यह उपदेश **कर्म से संन्यास** या **निष्क्रियता** को स्वीकार नहीं करता, बल्कि कर्मफल आसक्ति के त्याग का विचार देकर त्याग की भावना को सुरक्षित रखता है। गीता 'प्रवृत्ति से निवृत्ति' नहीं, बल्कि 'प्रवृत्ति से निवृत्ति' का समर्थन करती है।

कर्मयोग का आशय क्या है ?

गीता मतानुसार कर्मफलाकांक्षा से रहित होकर निष्काम भाव से सामाजिक कर्त्तव्यों एवं स्वधर्म का पालन करना ही।

ufrdrk

ufrdrk ekuoh; efLr"d dh mit gA vkj ekuo viuh idfr d vulkj 'kHkRo dk lrr vul/kku djrk gA uhfr'kkL= l vfHkik; v/;;u dh ml 'kk[kk l g tk ge vPNk&cjk] 'kHk&v'kHk] mfpr& vufpr] ufrd&vufrd vkfn 'kCnk dk Kku djkrk g bu 'kCnk d lkFk gh lekt o i'kklu dk jkLrk fn[kkrk g fd dkulk dUk0; mfpr g vkj dkulk dUk0; vufpr gA ykd i'kklu ,o uhfr'kkL= nkuk ijLij ?kfu"V :Ik l lcf/kr g i'kklu dh lQyrk] i'kkldk d lnkpj.k vkj ufrd fu;ek d ikyu ij gh fuHkj djrh gA ufrdrk l fd;k x;k iR;d i'kklfud dk; gh ykd i'kklu gA vkMo VhM के अनुसार प्रशासन एक नैतिक कार्य है और प्रशासक एक नैतिक अभिकर्ता gA i'kklu dk mn'; tu dY;k.k g rFkk ykd i'kklu mn';k dh ikfIr dk lk/ku gA mn'; ikfIr d fy, lk/;&lk/ku dh ifo=rk vko';d gA lk/; ftruk ifo= gk mruh gh lk/ku dh ifo=rk vko';d g xka/kh th d vuqlkj eu"; d iR;d {k= e साध्य एवं साधन की पवित्रता आवश्यक है।

'kHkRo ¼& ¼1½ lkekU; thou ,o lkekU; ekuo 0;ogkjA ¼2½ lkekftd 0;ogkj

bl idkj ufrdrk d nk i{k gkr g ¼&
¼v½ 0;fDrxr ¼ekuoh; x.k ½
¼c½ lektxr@lkekftd

प्रशासनिक नैतिकता :–

i'kklfud ufrdrk ;g dgrh g fd vf/kdkjh i'kklfud fu;ek d ikyu d lkFk&lkFk i'kklfud lkp o l{kerk d lkFk viu dk; dk fuogu vFkkr i'kklfud ufrdrk l vfHkik; uhfrxr ;k ufrd vkpj.k l g i'kklu e dk;jr iR;d inkf/kdkjh rFkk depkjh dk i'kklfud ufrdrk d nk;j e dke dju l g rkfd o inu 'kfDr;k dk n:Ik;kx u dj ldA i'kklfud vf/kdkfj;k ,o depkfj;k dk nkf;Ro g o viu dr0;k dk ikyu ijh bekunkjh] i.k fu"Bk vkj lpfj=rk l djx rFkk in ij jgr g, o ,lk dkb Hkh dk; ugh djx tk i'kklfud ufrdrk d fo:) gkA

नीतिशास्त्र के तत्व :–

lyVk d uhfr'kkL= d fuEufyf[kr rRo crk; g ¼&
1- food 2- lkgl 3- l;e 4- U;k;
5- ijkidkj 6- fu%LokFkrk 7 tokc ngh
8- mRrjnkf;Ro

food ¼& food mRiUu gkrk g rFkk vkj lk/kuk l of} gkrh g A

ri ¼& tu lEid vkj tu:fp l voxr gkuk]
lk/kuk ¼& vH;kl] vuHko
lkgl ¼& ifrdy ifjfLFkfr;k e dk; dju dk mRlkg
l;e ¼& fo'k"k fu;ek ¼fl)krk] uhfr;k½ d vUnj vkdyu djukA
U;k; ¼& io ifrf{kr fof/k d vulkj
Ikjkidkj ¼& LokFkjfgr nlj 0;fDr dk dk; djuk A
Tkokc ngh & 0;fDrxr :Ik e ftEenkjh Lohdkj djukA
mRrjnkf;Ro ¼& viu }kjk fd; x; dk; d fy, Li"Vhdj.k ¼mRrjnk;h nuk½

नीतिशास्त्र को बढ़ावा देने वाले तत्व :–

1- lokPp lkj 2- Lor= bPNk 'kfDr 3- ekuo fodkl
4- vkRek dh 'kkfUr 5- iutUe 6- b'ojh;

नीतिशास्त्र के क्षेत्र :–

1- i'kklfud 2- jktufrd 3- efMdy
4- dkuuh 5- 0;olkf;d 6- lpuk lc/kh
7- vUrjk"Vh;

प्रशासनिक नैतिकता सम्बंधी नियम :–

- lpfj= & nk"k;Dr thou 0;ogkj
- bekunkjh & mfpr oLr d fy, mfpr Li"Vhdj.k
- कौशल & dk; dju dh rduhd gkf'k;kjh
- ekuoh;rk& eu";d d dY;k.k d ifr Hkkouk
- dr0; ijk;.krk& fn; g; de dk dju dh n<rk
- jk"V d ifr oQknkj & jk"V fgr dh fprk djuk
- fu"i{k nf"Vdk.k& fdlh i{k dk 0;fDrxr :i l leFku
- विश्वसनियता & viu dk; ij vU; ykxk dk fo'okl
- i{kikr jfgr & fdlh i{k l lEc) uk gkuk
- xkiuh;rk & egRoi.k ekeyk dk fdlh vkokfNr 0;fDr dk idV djukA
- समाज हित में विश्वास & lekt d dY;k.k dh fprk djuk
- प्रशंसा में अविश्वास& viuh i'kla dh fprk u djuk
- tokcngh & fn; g; dk dke dh ftEenkjh yukA
- कानून में विश्वास & n'k d ifrf"Br dkuu d vu:i 0;ogkjA
- lpr & 0;fDr;k vkj ifjfLFkfr;k d ifr le> j[kukA
- ue& 0;ogkj& lkekftd 0;ogkj e fo'oklA
- itkr= e fo'okl
- dky pruk ¼le; dh ikcnh½

प्रशासनिक निर्णय के दौरान ध्यान रखे जाने वाले ufrd rRo ¼&

1- ijEijk vkj lk{; dk /;ku
2- iHkko'kkyh i'kklfud dk;
3- lpkj fof/k vkj i'kklfud lxBu
4- lekt d eY; rFkk ekud
5- i'kklu d ifr urkvk dk :[k
6- fo/kkf;dk rFkk e=heMy dh ijEijk,
7- lok& 'krk dh ifjiDork
8- i'kklu d ifr turk dh lkekftd Nfo
9 ljdkj vkj lxBu dh lkekftd Nfo
10- ifjoru d ifr turk dh prukA

i- प्रशासनिक नैतिकता से आप क्या समझते है\

m- प्रशासनिक नैतिकता :— uhfr'kkL= vFkok ufrd eY;k ij vk/kkfjr ,o lpkfyr i'kklu dk gh lkekU;r% ufrd i'kklu dgk tkrk gA nlj 'kCnk e ufrd eY;k o vkn'kk dk i'kklu e lekos'k o i'kklfud nkf;Ro dk fuoggu gh i'kklfud ufrdrk gA egRoi.k i'kklfud ufrd eY;k e lPpfj=rk] bekunkjh] dk'ky] ekuoh;rk] dRr0; ijk;.krk] jk"V d ifr oQknkjh] fu"i{k nf"Vdk.k] fo'oluh;rk] fu"i{krk] xkiuh;rk] lekt fgr e fo'okl] i'klk e vfo'okl] tokcngh dkuu e fo'okl] lrdrk] foue 0;ogkj] dky pruk vkj itkr= e fo'okl bR;kfn dk 'kkfey fd;k tkrk gA

fn; x; dl d lnHk e ge dg ldr g fd ;gk ij i'kklfud ufrd dRr0;k vFkok nkf;Rok vFkok eY;k dk leko'ku o 0;ogkj ugh fd;k x;k A vkj fn; x; lnHkk d vulkj ge bldh fuEu idkj l 0;k[;k dj ldr g%&

loiFke ge dg ldr g fd ftyk [kk| vkifr vf/kdkjh o [kk| vkifr fujh{kd u i'kklfud lprrk vkj dk'ky dk vHkko fn[kk;k ¼lkFk gh ftyk& eftLVV u Hkh½ [kk| vkifr ugh dh A bu lHkh u lPkfj=rk] bekunkjh vkj loie[k i'kklfud dk'ky tl ufrd rRok dk viu 0;ogkj e leko'ku o i'klu ugh fn[kk;kA

[kk| vkifr dh vlQyrk d lnHk e fj'or[kkjh dk vn'kk gh ugh gA fuf'pr :i l dgk tk ldrk g fd fofHkUu Lrjk ij dgh uk dgh U;ukf/kd Hk"V vkpj.k ¼Hk"Vkpkj½ o fj'or[kkjh e fylrrk fn[kkbZ nrh gA

bl dl e ge vdy i'kklu o i'kklfud vf/kdkfj;k dk gh ftEenkj ugh Bgjk ldr cfYd vke turk dh mnklhurk o vlprrk Hkh ftEenkj gA D;kfd fdlh Hkh turk ykdrkf=d i'kklu e lokijh o loie[k LFkku turk dk gh gkrk gA

vurr% funkukRed lnHk e ge ;gh dg ldr g fd turk dh tkx:d Hkkxhnkjh vkj i'kklfud nkf;Rok%& dÙkO;k] ufrd eY;k] jk"V d ifr oQknkjh] lprrk] dk; d'kyrk bR;kfn d }kjk gh i'kklfud

fo'olfu;rk dh LFkkiuk dh tk ldrh g vkj bl idkj dh ?kVukvk dk fu;f=r fd;k tk ldrk gA

loiFke i'u dh idfr d vulkj tk lokf/kd egRoi.k igy g mlg ukV djuk vkj bu igyvk d vulkj ¼,d ,d igy dk½ fo'y"k.kkRed vUrj fy[kukA

mRrj e jpukRedrk dk lekos'kA

oreku lnHk l i'u d mRrj dk tkMukA

;fn i'u d nk Hkkx g rk mRrj d Hkh nk cjkcj Hkkx gku pkfg, blh idkj Hkkx ;fn rhu g rk mRrj d Hkh rhu cjkcj Hkkx gku pkfg,A

ufrdrk ^ 'kHkRo dh vkj ekufld ;k=k**

ufrdrk ^ 'kHkRo dh vkj ekufld ;k=k** ¼'kHk ;k dY;k.k dk; gh ufrdrk gA½

vUrjk"Vh; ufrdrk d rRo %&
1- jk"Vk d chp lc/k 2- jk"Vk dh vkfFkd fLFkfr 3- jk"Vk d chp ifr;kfxrk
4- ,d jk"V dh nlj jk"V ij fuHkjrk 5- dVuhfrd lc/k 6- lfud lxBu
7- vUrjk"Vh; Lrj ij xjhch vkj lef) 8- opkfjd oe"; ¼fopkjk dh fHkUurk½
9- 'kkfr vkj lj{kk 10- vf/kdkj vkj fgrk dk lj{k.k
11- dRr0; vkj vf/kdkj 12- vUrjk"Vh; le>kr

dkikjV lkekftd mRrjnkf;Ro %&
dkikjV %& ; foRrh; mRiknu lLFkk, g tk ikdfrd lk/kuk ij vf/kdkj tek, g, gA budk lkekftd jktuhfrd {k= e gLr{ki gkrk gA

Hkkjrh; lekt e ;g dgkor ipfyr gk pdh g fd 1947 e ge jktuhfrd Lor=rk t:j feyh ysfdu vkfFkd vktknh lHkh rd ugh feyh gA ysfdu ;g dgkor dkikjV txr ij ykxw ugh gkrh D;kfd vkfFkd vktknh lPp ek;uk e dkikjV txr dk gh feyh gb gA

dkikjV gekjh lLdfr dk Hkh cny jgk g D;kfd dkikjV dEiuh;k fon'kk l fofHkUu idkj dh oLrvk ¼tl& lkUn; iI/ku lkexh½ dk vk;kr djd Hkkjrh; lekt e ipfyr dj jgh gA

fofHkUu idkj d vul/kkuk dk Hkh lokf/kd Qk;nk dkikjV txr gh mBk jgk gA

bUgh lc ckrk l ,d Toyr i'u gekj lkeu [kMk gkrk g fd vkf[kjdkj dkikjV txr dk fu;f=r dl fd;k tk; vkj lekt d ifr bld mRrjnkf;Ro dk dl LFkkfir fd;k tk;A

ufrdrk dk fu/kkj.k %&
1- lkekftd fu/kkjd %& ifjokj] lekt] /ke] lLdfr lkekftd iFkk,] vrjkRek bR;kfnA
2- lxBu %&
3- if'k{k.k %&

ufrdrk dk fl)kr ¼y{k.k½ %&
1- ekuo thou dk lEeku@ekuork dk lEeku
2- lekurk ¼ekuoh; lekurk½
3- njnf'krk
4- bekunkjh vkj lnHkkouk
5- d:.kk
ekuoh; fØ;kvk esa ufrdrk %&
- 0;fDr vkj lekt ij ufrdrk dk iHkko
- ufrdrk dk 0;kolkf;d thou ij iHkko ¼tSl egkRek c)) dk iHkko½
- ufrdrk dk jktuhfrd thou ij iHkko
- ufrdrk dk Ik;koj.k ij iHkko

ufrd fu.k; d vk/kkj %&
1- ufrd ltxrk 2- ufrd jgu dk vkRe fu.k; ¼tSl& lekV v'kkd½
3- ufrd bjknk 4- ufrd 0;ogkjA
ufrd dRr0; %&
1- thou dk lEeku 2- pfj= dk lEeku 3- lifr dk lEeku 4- lkekftd 0;oLFkk dk lEeku
5- lkekftd ixfr dk lEeku 6- ikekf.kdrk dk lEeku
7- ifjokj] lekt n'k rFkk ekuork d ifr dRr0;
प्रश्न : मनुष्य अनैतिक बनने के लिए विवश है
^^fVIi.kh dhft,A
mRrj & blds fuEufyf[kr dkj.k g &
1- eu"; dh vfuok; vko';drkvk dh ifr uk gkukA
2- dk; LFky ij dk; dk vleku forj.k ¼vlrfyr Hkkj½
3- dk; LFky ij fdlh fo'k"k vkneh dk ikFkfedrk
4- 0;fDrxr fo'k"krkvk dh vogyukA
5- lk/kuk dk n:Ik;kx ¼ljdkjh lk/kuk dk½
6- भाक्ति का दुरूपयोग।
7- Hkkdo ¼tkfr] /ke] fyx bR;kfn½
8- ?kl[kkjh@fj'or[kkjh
9- mPp vf/kdkjh dh vogyukA
10- dRr0; dk ikyu de djukA
11- lekt ;k n'kfgr dh vogyuk djd LokFk ifrA
vkfFkd ufrd leL;k,a %&
1- nj ls Hkxrku djukA
2- m/kkj ydj njh ls pdkukA
3- fnokfy;kiu ¼ vkfFkd {kfr igpkrk g tSl & fot; ekY;k
4- vkfFkd Hk"Vkpkj
5- कर्मचारियों का भोषण
6- iVUV d ennA
7- LokfeRo dk ennkA
8- dkikjV ftEenkjh dk vHkkoA
9- भोयर धारकों के मुद्दे।
10- ncko lewg dh Hkfedk

11- pd ckml ¼pd vuknj.k½ dk ennkA
lkekftd ufrd leL;k,a %&
1- f'k"Vkpkj dk fuokgu ugh djukA
2- i{kikr vkj neuA
3- d:.kk vkj n;k dk vHkkoA
4- ekuoh; eY;k e dehA
5- 'kk"k.k o nkguA
6- dik"k.k vkj fyxHkknA
Ik;koj.kh; enn %&
1- ouk dk fouk'k 2- in"k.k 3- Hkfe vf/kxg.k 4- ck/k dk fuek.k 5- i'k i{kh lj{k.k 6- tyok; ifjoru
vUrjk"Vh; ufrd enn %&
1- 0;kikfjd le>kr 2- lhek ty fookn 3- iVV fookn 4- tkllh 5- vUrjk"Vh; {k= e vk;kr fu;kr uhfr;k 7-ifrcf/kr nok, 7 'kj.kkFkh iuokl 8- vkrdokn ¼tu ekul e Hk; mRiUu dju d fy, fgld xfrfof/k gh vkrdokn gA½ 9- ;)&vijk/k o dnh leL;k 10- gfFk;kj d dkuu 11- ijek.k gfFk;kjk d ennA
i- eR;n.M dgk rd ufrd g\ foopuk dhft,A
m- foi{k %&
- U;k;/kh'k Hkh eu"; g] Hky dh xtkb'k
- U;k; dh lHkkouk lnk d fy, lekIr
- vijk/kh d 0;ogkj e l/kkj dh lHkkouk lekIrA
- Ik'pkrki rFkk vkRexykfu dk volj lekIr
- Ckny dh Hkkouk ¼ekr d cny ekr½ lekt d ifrdy A
- jkT; fdlh dk thou ugh n ldrk rk thou yu dk vf/kdkj dl gA
- eR;n.M ekuo fojk/kh g] Hk; dk lpkj gkrk gA
- ifjokj dk ekufld irkMuk gkxhA
- eR;n.M d ckn Hkh vijk/k ?kVu dh lHkkouk fuf'pr ugh gA
i{k %&
- vijk/kh dk vijk/k dju d fy, lnk d fy, jkdrk gA
- vU; 0;fDr;k dh n"iofÙk;k ij jkdA
- vijk/kk dh of) l lkekftd] lkLdfrd lj{kk dk [krjkA
- vijk/kk dk fujk/kkRed mik;A
- eR;n.M ekuork dh j{kk Hkh djrk gA
vfHkofr fuek.k %&
0;ogkj rho Hkko fo'okl
vfHkofr d ie[k rRo %&
1- vkrfjd lkeF; 2- x.k lePp; 3- dk; dju dh mi;Drrk
4- tUetkr vftr {kerk 5- dk'ky lh[ku d {kerkA

vfHkofr dk ijh{k.k %&

1- 0;fDr dh Hkk"kk vFkkr 'kCn i;kx
2- eu"; dh xfr ¼pyu dk <x & f'k"V ;k vf'k"V½
3- lVhdrk ¼mnn';i.k ckr gh djuk u fd vokfNr ckr djukA½
4- lpkj& dk'ky
5- rd 'kfDr ¼dFku rd ij vk/kkfjr gkuk pkfg,A½
6- fo'y"k.kkRed {kek
7- fu.k; dk vkfpR; ¼mfpr o vufpr fu.k;½
8- ekufld {kerk
9- xf.kr
10- fo"k; ck/k ¼tk fo"k; gk mld ckj e lEi.k tkudjhA½
11- lkekftd & vkfFkd vkj jktuhfrd le>A
12- KkukRed ifjfLFkfr ¼Kku iklr dju dh dkf'k'k dh ;k ugh Kku d ifr vkd"k.k t:jh gA½
13- n'k dky
14- bfrgkl ¼ ¼nfu;k e ?kfVr gku okyh ?kVukvk dh tkudkjh j[kuk½
15- dyk ¼dykvk d ifr lтxrk j[kuk] :fp j[kuk½
16- lLdfr ¼fofHkUu LFkkuk dh ijEijkvk] 0;fDr;k d vkpj.kk o 0;ogkjk d ckj e tkudkjh j[kukA½
17- Hkxky ¼Hkkxkfyd fofo/krkvk] tfVyrkvk] lHkkoukvk dk Kku½
18- Lkfo/kku ¼ ukxfjd dRr0;k] vf/kdkjk] fu;e& dkuuk dk ifjKku gkukA
19- lLdkj ¼ ekuoh; x.kofÙk l lcf/kr 0;fDr lLdkjoku vFkok lLdr gkrk gA
20- ljdkj ¼ vyx vyx idkj dh ljdkjk ¼jktr=] rkuk'kkgh] ykdr=½ d xBu] dk; i.kkyh bR;knh lHkh d ckj e tkudkjh gkukA
21- ltxrk ¼pkdUuk jguk] vkl& ikl dh ?kVukvk cnykok dh ltx o lEi.k tkudjh j[kukA½
22- opkfjd lryu ¼ fopkjk e lryu cuk; j[kuk@'kHk fopkj
23- संगठन क्षमता : संगठन में भामिल लोगों के बीच ,drk o lketL; rFkk lei.k dh Hkkouk dk fodkl djuk o cuk; j[kukA
24- Vhe od dh Hkkouk ¼ lc dk lkFk ydj pyu o dk; dju dh HkkoukA

- ;kX;rk %& d'kyrk l dke dju dh {kerkA f'k{kk vkj dk; d vk/kkj ij ;kX;rk fu/kkj.k gA
- vfHkofÙk ¼ ;g fdlh dk; dk dju dh ekufld ofÙk g vfHkofÙk eukoKkfud y{k.k gA
- miyfC/k %& viuh 'kfDr@;kX;rk }kjk iklr lifÙk] Kku] fo|k] /ku vkfn dk 0;fDr dh miyfC/k dgr gA
- :fp %& iln dh 0;fDrxr iofr tlk dh xkfi;k u ,d ckj ljnkl l dgk Fkk ^^m/kk eu eku dh ckr
- अभिवृति निर्माण के पश्चात् अभिवृत्ति :–
- iHkkoh rRo %& vfHkofÙk d vulkj ckdh lHkh dk;k ij iHkkoh gkdj dk; djA
- 0;ogkj rRo %& fof'k"V idkj d 0;ogkj vkneh dju yxrk g tk fu[kjk gvk] vf}rh; ,o peRdkfjd gk ldrk gA
- KkukRed rRo %& lkp le>dj dkb dke djuk@ 'kHk ikflr dk lokRre lokPp dk; djukA
- vfHkofÙk ekuo thou e D;k dke djrh g\
KkuyfC/k %& ¼fjr Kkur u efDr ½½ Kkuh@ vfHkofr lEiUUk 0;fDr lokPp in dk ik yrk g eu"; d ftru Hkh c/ku g o lHkh Kku :ih ryokj l gh dV ldr gA
- l)kfrd Kku dk 0;ogkj e lfuf'pr dj fn;k tkrk gA
- thou dh vuly>h xfRFk;k dk ly>ku e lgk;dA
- Kku ekuo thou dk fu;=d rRo g vkj ogh KkukRed vkpj.k djokrk gA
vã dk ck/k %& ¼vã cãkfLe & 'kdjkpk;½
- LoRo dk ck/k
- viR;{k ;k nk'kfud :Ik l dgk tk ldrk g fd bl lf"V e eu"; lokRre gA
- eu"; dh mPp lRrk dk ck/kA
- vKkuh o vfHkoÙkh ghu 0;fDr ge'kk ghu Hkkouk l xfLr gkrk gA ghurk dk ck/k dnkfi ugh gkuk pkfg,A
- eu"; dh egRrk vkj egkurk dk idV dju dh 'kfDr gkrh gA vfHkofÙk d Kku e of}A
- vrr% fu"d"kr% dgk tk ldrk g fd viu vã dk igpkuu d Ik'pkr vkneh Hk;eDr gk tkrk g vkj uk gh dHkh ghu Hkkouk dk f'kdkj gkrk gA

Lohdk;rk %&

- ;fn mi;Dr vfHkofÙk gk rk 0;fDr lekt e lo= Lohdk; ¼lkekftd Lohdk;rk½
- tl 'kdjkpk; eyr% nf{k.k l lc/k j[ku d ckotn lHkh txgk ij Lohdk; cu] ;gh bl dkj.k pkjk fn'kkvk e pkj eBk dh LFkkiuk ¼}kjdk] cæhukFk] txUukFkijh o Jxjh½
- 'k: gkdj D;k fxfj;k jg gk ^ cYyHkkpk;
vã dh j{kk %&
- Kkuh 0;fDr ijkfJr uk gkdj Lo; viu vã dh j{kk djrk gA

lR;fu"Bk@lPpfj=rk ¼**Integrity**½ %&

lR;fu"Bk fdlh lLFkk vFkok lxBu d eY;] fl)kr vkj ijEijk d vudy 0;ogkj gA ;k

lR;fuf"Brk ,d lkekftd lxBu vFkok 0;fDr e eY;k] fl)krk rFkk idfYir vkn'kk d 0;ogkj dk uke gA lR;fu"Bk flfoy lok dk ,d egRoi.k vk/kkjHkr eY; g vFkkr Hk;] ncko] iyksHku] iokxg ,o ik[kM l eDr gkdj lo/kkfud eY;k d ifr fu"Bk j[kr g, lkotfud fgr e viu dRr0;k dk n<rk iod ikyu djuk gh lR;fu"Bk gA LoPN fu"i{k ,o iHkkoh i'kklu dh LFkkiuk lR;fu"Bk d fcuk lHko ugh g bldk foifjr 'kCn Hk"Vkpkj gA lR;fu"Bk vk'k; g in vkj fLFkfr d vulkj viu nkf;Rok dk fuHkku e bekunkjh] fo'ouh;rk ,o ifrc/krk gkuh pkfg, lkotfud in ij cB ykxk dk ,lk dkb dk; ugh djuk pkfg, o foÙkh; ;k fdlh fdlh vU; :Ik e mudk vU; 0;fDr;k ;k lxBuk d e/; drKrk ink gk vkj ck/;rk mudk mu lxBuk d fgr e dk; djuk iM ;k mudk ljdkjh dk; fu"iknu iHkkfor gkA

lR;fu"Bk d idkj %&

0;fDrxr ckf)d lR;fu"Bk ¼**Intellectural Intergirity**½

1- 0;fDr dh dFkuh vkj dj.kh e vUrj fojk/k ugh gkuk pkfg,A vFkkr fopkj vkj 0;ogkj e lxrrk gkuh pkfg, A
2- viu fy, vkj nljk d fy, ekunMk e vrj ugh gkuk pkfg, vFkkr leku ifjfLFkfr;k e le:i ufrd ekinMk dk i;kx fd;k tkuk pkfg,A
3- nljk l olh gh vi{kk j[kuk] tk ge nljk d fy, djr gA
4- ikbjlh d vrxr ckf)r lin dk pjkuk ;k mle gj&Qj djd mldh ekfydrk dk nkok djuk ckf)d lR;fu"Bk dk mYy?ku gA tl nlj d fFkflhl dh pkjh djuk] fcuk btktr d E;ftd dh udy djukA

0;olkf;d lR;fu"Bk ¼**Professional Integrity**½%&

dkikjV rFkk 0;olk; fo'k"k e Lohdr eY;k ekudk ,o fun'kk d vulkj dk; djr g, viu y{;k dh ikflr dju dk i;kl gh 0;olkf;d lR;fu"Bk gA tl & nok dEifu;k }kjk xipi rjhd l ykxk ij fDyfudy Vk;y djuk A ljdkjh depkfj;k }kjk lR;fu"Bk dk vuikyu ,o dr0;k d ifr yxu dk lfuf'pr dju rFkk mud in ,o vf/kdkjk d n:Ik;kx dk jkdu d fy, vkpj.k fu;e dk gkuk vko';d gA vkpj.k नियमों को कानूनी भाक्ति प्राप्त है ये आचरण नियम lfo/kku d vuPNn 309 d v/khu tkjh fd; x; gA

ykd lodk dh lR;fu"Bk d rRo %&

1- ljdkjh dk;k d fu"iknu e bekunkjh ,o ftEenkjh dk gkuk %&
2- depkfj;k dk le; ij dk;LFky ij mifLFkr gkukA
3- ljdkjh depkjh }kjk ljdkjh lk/kuk ¼lkotfud lEifÙk½ dk n:Ik;kx ugh djuk &

➢ tl & VfyQku] dkj bR;kfn dk Lo; d fgr ;k futh fgr d fy, mi;kx ugh djukA
➢ jYo dh Hkfe ij vo/k >Xxh >kifM;k dk fodklA
➢ ljdkjh tehu ij vo/k o vufrd rjhd l fdjk;k vkfn yukA
➢ urkvk vkj turk }kjk ljdkjh lk/kuk@Hkfe dk n:Ik;kx ukdj'kkgh d le{k ,d Toyr vkj c<h leL;k gA

4- विनम्र, मानवीय व शिष्ट व्यवहार का निर्वहन करना :—

➢ gekj ;gk in ifr"Brk l vgdkj dk tUe gk tkrk g tcfd ,lk ugh gkuk pkfg,A
➢ in ifr"Bk dh otg l vDlj vf/kdkjk o 'kfDr;k dk n:Ik;kx Hkh n[kk tk ldrk g tl ifylI dk 0;ogkjA
➢ lln] fo/kku lHkk, lHkh turk d efnj g ij ogk turk dk tku dh vuefr ugh gA

5- turk d /ku dk U;k;i.k rjhd l [kp fd;k tkuk pkfg,%&

yfud 0;ogkj e lo= vU;k;io o vufrd rjhd viuk; tk jg g tl & pkjk ?kkVkyk] xyr rF;k d }kjk] S.C./ST Nk=ofr;k e xcu] Ldyk e ehM M ehy ;kstuk e vfu;ferrk o Hk"Vkpkj] ljdkjh ef=;k vkfn dh lj{kk d uke ij cgr T;knk ¼0;Fk½ [kpk vkfnA ljdkjh fuek.k dk;k e vR;f/kd Hk"Vkpkj ¼Hkou] lMd] iy½

6- ljdkjh ¼lkotfud½ fgrk dk rjthg nuk %&

➢ D;kfd ljdkjh fgr vkj 0;fDrxr ¼futh½ fgr ijLij fojk/kh gkr gA
➢ futh fgrk dk T;knk egRo fn; tku d vud mnkgj.k n[k tk ldr g tl& dk;yk vkoVu] 2 th vkoVu vkfnA
➢ ifjokjokn] Hkkb & Hkrhtkokn bR;kfn Hkh lkotfud fgrk dh vun[kh dk dkj.k cu tkrk gA
➢ ; lHkh ykdrkf=d o ufrd eY;k d foijhr gA

Ik- D;k dkj.k g fd Hkkjr e ljdkjh ¼lkotfud½ i{k uhp tk jgk g tcfd futh i{k fujUrj rjDdh dj jgk g\ 0;k[;k dhft,A vFkok

Hkkjr e ljdkjh r= dh foQyrk d D;k dkj.k g ;fDr;Dr fopkj dhft, vkj funku l>k;A

m- dke ugh nke ugh & Hkkjrh; lnHk e ,d egRoi.k lek/kkuRed fcUnA

ljdkjh foQyrk d dkj.k %&

ljdkjh dk;ky;k e dke pkjh dh iofr dk gkukA
ljdkjh HkV vkj migkj dk ojh;rk nukA
fj'or[kkjh dh vknr dk gkukA
rF;k dk lR;:lk e idV u fd;k tkuk vFkkr rF;k dk rkM&ejkMdj i'k fd;k tkuk rFkk dkuuh fu;ek vkj o/kkfud ifØ;k, tk viuh 'kfDr [kk pd gA
dkuu dh ncyrk dk gkuk tl dh u; toukby ,DV d iko/kku d vUrxr fd'kkjk dk me dn gk ldrh g yfdu 0;Ldk d leku Qklh ugh nh tk ldrh A
lR;fu"Bk dk de dju oky fuEu fyf[kr dkjd ektn g %&

1- i{kikr dk gkuk tl tkfrxr] /kkfed] jktuhfrd Lrj ij i{kikr@HkkbHkrhtkokn dk gkukA
2- jktuhfrd lj{k.k dh iofr dk gkukA
3- jktuhfrd xfrfof/k;k tl Hk"VkpkjA
4- lgu'khyrk & vijk/k dk vFkok xyr dke dk lgu djuk rFkk lcrk d vHkko e tl lgkuHkrh j[kukA
5- [kykiu dh deh g tl vijkf/k;k dk xi pi e gh Qklh n fn;k tkukA
6- 0;kolk;hdj.k & tl cM cM odhy ilk dh otg l vijkf/k;k d i{k e odkyr dju dk r;kj gk tkr g A
7- mPp vkn'kk d ifr fu"Bk e deh dk gkuk A
8- vPN vkpj.k dh ckrk dk doy fl)krk e gkuk 0;ogkj e mudk vHkko gkukA
9- detkj ox dh mi{kk djuk tl dh efgyk, SC/ST vkfnokl h A

gkykfd bud mRFkku fodkl d fy, fofHkUu dkuuk ,o ;ktukvk dk fuek.k vkj fØ;kUou fd;k x;k g yfdu tehuh Lrj ij vHkh Hkh budk iHkko ugh n[kk tk jgk gA

ukyu lfefr ¼ynu½ 1994 d }kjk lkotfud in ij vkflu ykxk d ufrd ekunM d fu/kkj.k gr l>ko fn; x; g bu l>kok l ;g irk pyrk g fd ,d ykd lod e fdu fdu ufrd x.kk dh fo|ekurk dk gkuk vko';d gA

lkotfud thou d lkr ey rRo %&
1- fu%LokFkrk 2- lR;fu"Bk 3- oLrfu"Brk 4- tokcngh 5- [kykiu@ikjnf'krk
6- bekunkjh 7- urRo

bu l>kok l Li"V g fd 'kklu e ufrdrk rHkh vk;xh tc ykd lodk e mijkDr eY; 0;ogkj d Lrj ij vfHk0;Dr gkxA ,o mud fØ;kdyki bu eY;k l lpkfyr gkx doy fu;ek ,o dkuuk d gku ek= l ykd lok d vkn'k dk iklr ugh fd;k tk ldrk cfYd ,l eY;k dk /kkj.k Hkh vko';d g rkfd fu.k; ,o dk; djr oDr vf/kdkjh ufrdrk dk vkn'k mifLFkr dj ldA

i- iFk fujis{krk@ vlyXurk ¼Non Partisanship½ D;k g\

m- leLr 0;fDr;k dk leku nf"V l n[kuk] fQj Hky gh ihfMr 0;fDr jDr lc/k gh j[krk gk ;g Hkfedk l;Dr jk"V l?k d lkeu mHkjrh g tk leLr fo'o dk ifrfuf/kRo leku nf"Vdk.k l djrk g] ;|fi 0;ogkfjd Lrj ij ;g fopkj fo|xfri.k gA lkFk gh puko e fdlh Hkh ny d ifr ioekU;rk o iokxg l xflr ugh gkdj Hkkxhnkjh djuk i{k fujis{krk dk gh ldfrr djrk gA

i- oLrfu"Brk l vki D;k le>r g\

m- 0;fDr dh Hkkouk ,o eY;] :fp vkfn l foijhr fopkjA oLrfu"Brk d vUrxr fo'olfu;rk o/krk ,o ekud 'kkfey gkr gA ljdkjh inkf/kdkjh dk ljdkjh dke djr le; tl lkotfud fu;fDr;k djuk] lfonkvk dk Lohdrh nuk] ljdkjh uhfr;k dk dk;kUo;u djr le;] vkink d le; lgk;rk igpku d Øe e jkgr lkexh;k dk forj.k vkfn dk;k dk lEikfnr djr le; mld dk; vkj fu.k; rF;k ,o x.kk d vk/kkj ij gku pkfg, vkj tgk rd gk ld 0;fDr fu"Brk l cpuk pkfg,A

i- Hkkjr e ljkxlh dkuu dk ydj py jg fookn dk le>kb, ,o bld ufrd i{k dk ydj py jgh vk'kdvk ij ppk dhft,\

m- lkekftd lkLdfrd fookn dk u;k igy %&
ljkxlh dk 'kkfCnd vFk g ½ fdlh vkj dk viu dke d fy, fu;Dr djuk ljkxlh oLrr½ og ifØ;k g ftle olh efgyk tk fdUgh dkj.kk l lrku l[k l ofpr g] cPp dk tUe nu e vleFk g o 'kØk.k vkj v.Mk.k dk fu"kpu djkdj Hk.k dk vU; efgykvk dh dk[k e Mky fn;k tkrk gA tk efgyk cPp dk tUe nrh g ml ^ljkxV enj* dgk tkrk gA blem ml efgyk d vkuokf'kd rRok dk iHkko ugh iMrk cfYd tUe yu oky cPp dk jx] yckb] idfr] vkuokf'kd x.k vkfn lHkh vkuokf'kd ekrk&firk d gkr gA

ljkxlh dk dkj.k ,o lHkkouk, %&
ljkxlh d c<r ipyu dk ,d dkj.k xjhch gA Hkkjr e ljkxlh dk dkuuh ekU;rk iklr gA ,lh fLFkfr e vkfFkd :i l lEiUu ijr fdUgh dkj.kk l lrku l[k l ofpr ykx ^ljkxV enj* dh enn l nkEir; l[k dk ykHk yu e l{ke gk tkr gA blds fy, ljkxV enj dk ,d fuf'pr jkf'k dk Hkxrku fd;k tkrk gA Hkkjr e ljkxlh }kjk cPp iklr dju dh lqfo/kk dk rth foLrkj gk jgk gA Hkkjrh;k d lkFk&lkFk fonf'k;k dk Hkh ;gk ljkxV enj vklkuh l fey tkrh g A vc bl Ik;Vu l Hkh tkMdj n[ku dh ckr dgh tk jgh gA ;gk lrku d bPNd ijUVl dk Vj vkijVj ijk idt vkQj djr gA ftle ljkxV enj d

lkFk&lkFk uflx& gkEl d lkFk mudk lid cuk jgrk gA
okf.kT;d mi;kx ¼ ijfgrdkjh nf"Vdk.k ¼nkLr] ?kj d lnL;½
fookn dk fo"k; ¼&
1- ljkxV enj cPp ink dju d ckn Hkkoukvk d vko'k e vkdj cPp dk mud dkuuh ekrk&firk dk nu l bdkj dj nrh gA
2- tc ljkxV enj l ink cPpk fodykx gk ;k tMok gk fQj o lh fLFkfr e vkuof'kd ekrk&firk ml viuku l bdkj dju yxr gA
3- Hk.k dk fyx ijh{k.k d lk'pkr ljkxV enj d ek/;e l cPpk ink dju dk i;klA
Hkkjr e ljkxlh dkuu ¼&
Hkkjr e ljkxlh l lc/kh fookn dk iHkkoh rjhd l fuiVkj gr cuk;k x;k dkuu vflLVM jhikMfDVo VDukyktht ¼jxy'ku½ fcy 2010 gA bl fo/k;d d vulkj 21 l 35 o"k vk; rd dh efgyk gh ljkxV enj cu ldrh gA bl vf/kfu;e e fonf'k;k }kjk ljkxlh fy, tku l lcf/kr 'krk dk Hkh mYy[k gA ble ,d efgyk }kjk vf/kdre rhu ckj gh ljkxV enj cuu dh lhek fu/kkfjr dh xb gA ijr ;fn ml igy l nk lrku g rc doy ,d ckj gh ljkxV enj cu ldrh gA bl nkjku fyx ijh{k.k dk Hkh ijh rjg l ifrcf/kr fd;k x;k gA
Hkkjr e ljkxlh blfy, Hkh vklku g D;kfd gekj ;gk vf/kd dkuu ugh gA ;|fi Hkkjr e okf.kT;d ljkxlh dk fof/kd ekU;rk iklr g ijr vkt Hkh bl 0;oLFkk dk fu;eu fof/kor <x l ugh gk ikrk gA
Hkkjr e ljkxlh d fu;e fuEu fyf[kr g ¼&
Lkjkxlh l ink g, cPp ij vkuof'kd ekrk&firk dk gd gkxkA xkn yu oky ekeyk dh rjg ble fdlh ?kk"k.kk dh t:jr ugh gkrh gA
cPp d tUe iek.k k= e doy vkuof'kd ekrk&firk dk gh uke gkuk pkfg,A
ljkxlh dk.VDV e ljkxVj enj d thou chek dk mYy[k & fuf'pr :lk l fd;k tkuk pkfg,A
;fn ljkxV cPp dh fMyhojh l igy vkuof'kd ekrk& firk dh eR; gk tkrh g ;k mue dkb Hkh cPp yu l euk dj nrk g rk cPp d fy, vkfFkd lg;kx dh 0;oLFkk dh tk;A
Lkjkxlh d lc/k e fof/k vk;kx u Hkh viuh 228 oh fjikV e dN egRoi.k fIQkfj'k dh gA ljkxlh l lcf/kr le>kr e ljkxV enj d thou dh 0;oLFkk vfuok; :lk e gkuh pkfg,A bld lkFk gh iXuUlh d nkjku fyx tkp ij ijh rjg ifrcf/k gkuk pkfg,A ljkxlh dh ijh 0;oLFkk lHkh lfEefyr i{kk d e/; g, le>kr l Hkh lpkfyr gkuh pkfg,A bl le>kr e lHkh 'krk dk mYy[k gk ijr bldk mi;kx okf.kT;d u gkA
of'od ifjn';
ljkxlh dk ipyu fon'kk l ikjHk gvk ijr Hkkjr tl fodkl'khy n'kk e ;g vo/kkj.kk rth l ilkfjr gk jgh gA tgk ;jkih; n'kk e ;|fi ljkxlh ekU; g ijr ogk bl lnHk e dM dkuu gA tkiku e ;g vkt ifrcf/kr gA Hkkjr e bl lnHk e fo'k"k lrdrk dh vko';drk g D;kfd ;g &
1- महिलाओं के भोषण का साधन बन सकता है। efgykvk dk il dk ykyp ndj mUg ckjckj bl dk; d fy, ifjr fd;k tk ldrk gA
2- mUg vk; d lkr d :lk e bLreky fd;k tk ldrk gA
3- bll ctkjhdj.k dk c<kok fey ldrk gA
4- bll fyx ijh{k.k dk pyu c< ldrk gA tl& अभिनेता भाहरूख खान पर यह आरोप लगा कि लिंग ijh{k.k d ckn mUgku ljkxV cPp dk viuk;k gA
5- bll ekuoh; eY;k ij Hkh igkj gk ldrk gA
6- vHkh n'k e fu%lrku nifÙk;k dk lrku l[k nu oky ,vjVh Dyhfudk ij fuxjkuh d fy, dkb r= ugh gA
Hkz.k gR;k ¼&
- Hk.k gR;k yfxd vU;k; dk iFke i{k ,o ikfjokfjd fgld dk xlr :i gA ;g Hkkjr dh ,d ie[k lkekftd leL;k gA
- ijh{k.k d ek/;e l ;g tkudj fd Hk.k L=hijd g ml Hk.k dk xHkk'k; e gh u"V dj mldk L[kyu djk nuk Hk.k gR;k gA

Hkz.k gR;k d fuEu fyf[kr dkj.k g¼&
lkekftd dkj.k ¼&
- o'k ijEijk c<ku dh ftEenkjh i= ijA
- i=ikfIr ij lkekftd lj{kk dk HkkoA
- i= ikfIr ij lkekftd ifr"Brk e of) dk HkkoA
- firk d eR; gku ij e[kkfXu nu dh ftEenkjh i= ijA

vkfFkd dkj.k ¼&
- ngt iFkk dk c<rk ipyuA
- ijk;k /ku ekuu dh ioÙkhA
- lkekU;r ?kjy dk; eY;fofguA

Rkduhdh dkj.k ¼&
- vklkuh l Hk.k dh igpku dj ljf{kr :i l Hk.k gR;kA
-

Hkz.k gR;k dk n"ifj.kke ¼&
fyxkuikr vlrfyr ftld n"ifj.kke lkeu vk jg g 2011 dh tux.kuk d vulkj ;g vuikr 940 gA

NMNkM] vigj.k] efgykvk dh [kjhn&Qjk[r] ;ku mRihMu] o';kofÙk vkfn lkekftd cjkb;k dk c<kokA Lkkekftd fodkl e ck/kk] lkekftd vlryu dh fLFkfr mRiUuA

Hkz.k gR;k d ufrd i{k %&

- xHkikr l efgyk fo'k"k dk [krjkA
- ekuoh; eY;k dk iruA
- ekuo dk lonukRed i{k detkj gk tkrk gA
- lcl eyHkr ^vf/kdkj thou dk vf/kdkj* gA ;gk mldk mYy?ku gkrk gA
- ,d funk"k ik.kh dk mld thou l ofpr djuk vufrd dk; gA
- Hk.k gR;k ,d fo'k"k fyx d ifr fd;k x;k A vU;Fkk bl :Ik l ;g lekurk d vkn'k d foijhr gA
- dkV erkulkj ;g iR;d eu"; lk/; gA ;gk mldk mYy?ku fd;k tkrk gA

dc tk;t Bgjk;k tk; Hkz.k ijh{k.k%&

- ;fn mnn'; vkj i;ktu Bhd gk rk &
- vud chekfj;k ¼e/kegj ikjfdlu vkfn½ ,lh g ftudh igpku xHkkoLFkk e lHko g vkj Fkjkih }kjk mldk mipkj fd;k tk ldrk gA
- जेनेटिक भोधा एवं अध्ययन के कर्म में।

dc tk;t %&

- ;fn xHkorh ek dk thou [krj e gk ¼tl& vk;jyM d ?kVuk e gvk FkkA½
- cykRdkj d lnHk e ¼lki{k fLFkfr dk /;ku e j[kuk gkxkA½
- f'k'k dk [krj l cpku d fy,A

funku dk mik; %&

- lkekftd lkp e ifjoru ykuk gkxkA
- efgykvk d ifr nf"Vdk.k cnyuk gkxkA
- lekthdj.kdh ifØ;k dk ekuoh; ,o eY;kRed cukuk gkxkA
- xkn yu dh lefpr 0;oLFkk dh tk;A
- rduhd d n:i;kx dk iHkkoh rjhd l jkdk tk;A
- L=h& i:"k lekurk dk c<k nu oky nk'kfud विचारों को बढ़ावा दिया जाये जैसे– भांकराचार्य।
- L=h dk vkfFkd nf"Vdk.k l l'kDr cuk;k tk; rkfd ml ck> d ctk; ojnku ekuu dh iofÙk c<A lkbuk ugoky] bfnjk u;h] jk[kh fcMoku] dYiuk pkoyk vkfn d ckj e ln'k i lkfjr fd;k tk;A
- l/kkjkRed ,o fuokjd nM ifØ;k dk lgkjk fy;k tkuk pkfg,A

PCPNDT ,DV ¼vf/kfu;e 1994½ %& ih dkUI'kuy ,M ih&uVky MkXukfLVd VDuhDl ,DV] 1994 ¼fyx p;u fu"k/k vf/kfu;e½

D;k yk;k x;k &

1- dU;k Hk.k gR;k ij jkd yxku grA
2- fyxkuikr e l/kkj yku grA
3- lekt e 0;klr yfxd vlekurk dk nj dju grA
4- dU;kvk dk lekt e mfpr LFkku fnyku rFkk tkx:drk yku grA
5- ,lh uhfr;k dk fuek.k djuk rkfd mUg lekt vkj jk"V e i:"k d led{k vf/kdkj fey ldA

lkh lhih,uMhVh vf/kfu;e 1994 e cuk;k x;k Fkk जिसे बाद में **2003** में संशोधित किया गया।

- xHkkoLFkk d nkjku Mk;XukfVLd doy ithdr Dyhfudk ,o i;kx'kkykvk e gh fd;k tk;xkA
- bl nkjku xHk d fyx dk crkuk dkuuh vijk/k ekuk tk;xkA
- ble fyx fu/kkj.k dk crku oky fDyfud ;k i;kx'kkykvk d MkDVjk dk te lkfcr gku ij rhu lky dn ,o nl gtkj :Ik; rd dk teku dk iko/kku fd;k x;k gA
- vxLr 2013 % gky gh e fyx vuikr ,o Hk.k gR;k ij xfBr lVy lijokbtjh ckM ¼lh,lch½ dh cBd e u; iko/kkuk dk ihlhih,uMhVh ,DV e tkMk x;k gA
- ihlh ,M ih,uMh ,DV e ;g Hkh iko/kku fd;k x;k g fd vYVklkmM e'khuk dk ithdr fd; cxj cpu okyk d f[kykQ dk;okb dh tk;xhA ,lk dju l vc bu e'khuk dh xj dkuuh fcØh ij jkd yxxhA ble igyh ckj fcuk ithdj.k e'khuk dk cpu okyk d f[kykQ dk;okb dk Qlyk fn;k x;k gA bl igy fQ ,l midj.k [kjhnu okyk ij gh dk;okb dk iko/kku FkkA
- lHkh jkT; ljdkjk dk dgk x;k g fd gj ,d vYVklkmM e'khu dk fjdkM j[kk tk; rFkk vYVklkmM e'khu cpu oky difu;k l gj rhu efguk l vkfMV dk iko/kku fd;k x;k gA
- lh,lch u dkuuk dk ykx djoku d fy, dkM vkQ dUMDV Hkh r;kj fd;k gA fyxkuikr 2001 e tgk 927 Fkk] og 2011 dh tux.kuk e c< dj 940 gk x;k gA

dgk leFku %&

LohMu % xHkikr efgykvk dk 0;fDrxr vf/kdkj

2011 dh tux.kuk e lcl fuEu Lrj ij fyx vuikr % fiNy 20 lkyk l yMd yMfd;k d vuikr e yxkrkj fxjkoV vk jgh gA o"k 1991 dh tux.kuk d vulkj 0&6 o"k vk; d cPpk e ifr gtkj yMdk d chp 945 yMfd;k FkhA 2001 d tux.kuk e ;g

vuikr ?kVdj 927 gk x;k FkkA 2011 dh tux.kuk e [kyklk gvk g fd yMfd;k dk ;g vuikr vkj Hkh ?kVdj 914 rd vk x;k gA n'k d 22 jkT;k vkj 5 dUæ 'kkflr in'kk e fyx vuikr dh nj e fxjkoV utj vkb gA

i-uhfr'kkL= D;k g\

m- uhfr'kkL= ,d ekudh; ,o lektfoKku g ftle l)kfUrd ,o 0;ogkfjd lHkh i{k vkr gA ble lekt e jgu oky lHkh eu";k d vkpj.k dk] lfp= dk mfpr & vufpr dk] ufr jk; dk o ufrd jk; dk o ufrd 'kCnk d vFk l tM i'uk dk v/;;u o eY;kdu fd;k tkrk gA lf{kIrr% lekt e jgu oky lkekU; eu";k d ,fPNd dek ¼vkpj.k½ dk eY;kdu fufr'kkL= e fd;k tkrk gA

i- 'kHk D;k g\

m- ufrd nf"V l vPN de 'kHk gA 'kHk&v'kHk lk/; d lki{k /kkj.kk gA

i- v'kHk D;k g\

m- ufrd nf"V l cj de v'kHk g lk/; d lki{k /kkj.kk gA

i- lnx.k D;k g\

m- lnx.k og g tk lno 'kHk vkj mfpr d i{k e jgr g rFkk mfpr o vufpr e Hkn dk Kku djkr gA ;g 0;fDr o lekt dk ufrd jkLr ij y tkr gA

i- ldYi dh Lor=rk D;k g\

m- fdlh Hkh dk; dk dju dh Lor=rk] ldYi Lokr=; gA 0;fDr ufrd o vufrd dek d vrxr rHkh vkrk g tc mld ikl ldYi dh Lor=rk gkA

i- ufrdrk d fu/kkjd fdl dgr g\

m- 'kHk&v'kHk] vPNk&cjk] pfj= vkpj.k dk fu;fer & fu/kkfjr dju oky vkj bud vk/kkj gh ufrdrk d fu/kkjd gA

i- LokFkokn D;k g\

m- ;g ifj.kkeokn dh 'kk[k gA iR;d 0;fDr ey iofÙk e LokFkh gkrk g rFkk mlI iR;d fu.k; blh vk/kkj ij djuk pkfg, fd mld LokFk dh vf/kdre lrf"V fdl fodYi }kjk gk ldrh gA

i- l[kokn D;k g\

m- ;g ifj.kkeokn dh 'kk[kk g iR;d 0;fDr eyr% viu l[k dk vkdk{kh gkrk g vr% mlI iR;d fLFkfr e mlh fodYi dk p;u djuk pkfg, tk mI vf/kdre l[k inku djA

i- mi;kfxrkokn D;k g\

m- ;g ifj.kkeokn dh 'kk[kk g vkj l[kokn dk ,d idkj g A fdr ;g l[k dh ctk; vf/kdre 0;fDr;k d vf/kdre l[k ij cy nrh gA bl ijkFkokn l[kokn Hkh dgr gA

i- futh lEc/k fdl dgr g\

m- o lc/k ftudk iHkko mle 'kkfey 0;fDr;k ij gh iMrk g] lekt ij ugh futh lc/k dgykr gA tl & nk ?kfu"B fe=k e lc/kA

i- lkotfud lc/k D;k g\

m- o lc/k ftue vrjxrk ugh gkrh vkj mudk iHkko 0;fDr d vykok lekt ij Hkh iMrk g] lkotfud lc/k dgykr gA tl& ukxfjd o vf/kdkjh d lc/kA

i- lkotfud thou e ufrdrk d nk vk;ke dku l gA

m- fcVu dh 1994&1997 e xfBr ukyu lfefr u lkr ie[k fl)kr crk,&

1-fuLokFkk fu"Bk 2- lR;fu"Bk 3-] oLrfu"Bk 4- tokcngh 5- fu"diVrk 6- bekunkjh 7- urRo

i- to&uhfr'kkL= D;k g\

m- thou yu o nu l lcf/kr] LokLF;] nokb;k vkj mHkjrh gbZ rduhdk l lcf/kr ufrd enn to&uhfr'kkL= d vUrxr vkr g % tl& fDyfudy Vk;y] ;Fkuf'k;k] n;k&eR;] bPNk eR;] eR;n.M bR;kfnA

i- dkikjV ufrdrk D;k g\

m- og uhfr'kkL= tk dkjckjh ekgky e ink g, ufrd fl)krk o leL;kvk dk eY;kdu djrk g rFkk mud lnHk e dN ufrd ek.nMk dh LFkkiuk djrk g] mlI dkikjV ufrdrk dgr gA tl 0;kikj] y[kkdu] ekuo] llk/ku& ic/ku] foØ;] foi.ku] mRikn] dk'ky] ckf)d lEink l lcf/kr uhfr'kkL=A

i- vkpkj lfgrk D;k g\

m- fdlh foHkkx ;k {k= ;k 'kklu e Lohdr ,o vLohdr 0;ogkjk dh lph dk vkpkj lfgrk d vrxr 'kkfey djr gA

i- vfHkofr fdl dgr g\

m- o tUetkr {kerk,] ftUg ;fn vudy okrkoj.k ,o mi;kxh ifj{k.k fey rk 0;fDr mu {k=k e vR;f/kd lQy gk ldrk gA

i- eukofr D;k g\

m- fdlh Hkh eukoKkfud fo"k; d ifr gekjk ldkjRed ;k udkjRed eY;kdu gh eukofÙk gA

i- lfg".krk fdl dgr g\

m- lfg".krk dk 'kkfCnd vFk ^lgu djuk* g fdr oreku e bldk i;kx ldkjRed vFk e gkrk g& viu fojkf/k;k d fopkjk dk lEeku djuk] mUg luu le>u dh {kerk j[kuk vkj ;fn mudk i{k rkfdd o lgh g rk mI Lohdkj djuk gh lfg".krk gA

i- fu"i{krk ;k rVLFkrk dk le>kb;\

m- fu"i{krk U;k; dk ,d ie[k fl)kr gA ftle iokxg vkj fgr d LFkku ij fu.k; flQ oLrfu"B dkj.kk dk vk/kkj cukdj fd;k tkrk gA

i- d:.kk ;k lgkuHkfr fdl dgr g\

m- detkj 0;fDr ,o ikf.kvk d ifr mRiUu gku okyk Hkko ftle ihfMr 0;fDr d n%[k nj dju e ge lgk;rk djj ml d:.kk dgr gA

i- ^HkkorkRed iKrk* D;k g D;k g vkj ykxk e fdl izdkj fodflr dh tk ldrh g\ fdlh 0;fDr fo'k"k dk ufrd fu.k; yu e dl lgk;d gkrh g\

m- f}rh; iz'kklfud lq/kkj vk;kx dh pkFkh fjikV 'भासन में नैतिकता' होना कमेटी द्वारा सिविल सेवा में lq/kkjk dh odkyr dju ,o oreku e ufrd eY;k d iru d n[kr g, iz'kklfud uhfr 'kkL= dk v/;;u vifjgk; gA bldk vk/kkj LrEHk g& HkkoukRed iKrkA Lo; d ,o nljk d loxk dk le>uk]mudk ic/ku& fu;e gh HkkoukRed cf)eÙkk gA nlj 'kCnk e ekuoh; Hkkoukvk] eukfLFkfr;k vkfn dk igpkuuk] tkuuk] le>uk vkj bu ij fu;=.k djuk gh HkkoukRed cf)eÙkk gA budk fodflr dju d nk Lrj g igyk cpiu e rFkk nljk ftUgku cpiu e ugh lh[kkA cpiu e bl lh[ku d rhu Lrj g %&

1- 'k:vkrh d{kk, ¼d{kk rhu rd½ & cPpk dk fp=k] ohfM;k] cukoVh pgj cukdj i<kuk rkfd o eukHkkok dk lVhd vueku yxkuk lh[k ldA

2- e/; ox dh d{kk, ¼d{kk pkj l vkB rd½ & ble cPpk e lekuHkfr dk vH;kl djk;k tkrk g vkj dkf'k'k dh tkrh g fd cPp Hkkf"kd lEi"k.kk d lkFk xj&Hkkf"kd lEi"k.kk dk le>r o egll djr gA

3- mPp d{kk, & bl Lrj ij db vU; i{k fl[kk; tkr g tl &

ruko e Hkkoukvk dk ic/ku djukA

fookn gku ij ,lh vfHk0;fDr;k dk i;kx djuk ftlls lek/kku fudy u fd fookn c<A

fojkf/k;k dh ckr /k;r l luu dk i;kl djA

blds vykok HkkoukRed cf)eRrk dk fodkl fd;k tk ldrk gA ftUgku HkkoukRed cf)eRrk dk ugh lh[kk g mud fy, fuEukfdr l>ko g &

vkReeY;kdu dh ifØ;k e dfe;k dk [kydj Lohdkj djA

dfe;k l dfBr u gk vfirvius fo'k"krkvk l [k'k gkA

dkjh Hkkodrk fnekx e gkoh u gku nA

Lo; dk ruko o volkn e u tku nA

mi;Dr rjhdk l HkkoukRed cf)eÙkk dk fodkl fd;k tk ldrk g vkj ;g fdlh 0;fDr fo'k"k dk fu.k; yu e lgk;rk Hkh djrh gA D;kfd 0;fDr dkjh Hkkodrk e fu.k; ugh yrk g vkj viu ruko dk ic/ku dj yrk gA

bll 0;fDr u doy lc/kk dk ic/ku dj ikrk g vfir vuko';d ncko ij Hkh fu;=.k dj yrk gA HkkoukRed cf)eRrk okyk 0;fDr tc fu.k; yrk g rk rVLFkrk] fu"i{krk] oLrfu"Bk bR;kfn dk ikyu djrk gA

Lkkjrh; ekuo d ufrd ,o vk/kkjHkr fodkl e] 'kklu i'kklu e Hk"Vkpkj ij vd'k yxku] thou e lQyrk] thou tlu dk rjhdk lh[ku] lonu'khyrk o lR;fu"B d fodkl bR;kfn e ;g cgr mi;kxh gA

i- f}rh; iz'kklfud lq/kkj vk;kx }kjk ykd iz'kklu e ufrd eY;k d lq'kfDrdj.k grq fn;s x;s lq>koks dk foLrkj l o.ku djs\

m- 1- ykd lok eY;k dk Åpk mBkuk pkfg, vkj ljdkjh v) ljdkjh {k=k e ykx gku pkfg,A

2- lokjr vf/kdkfj;k dk ykd miØek e eukuhr u fd;k tk;A

3- ,d 0;kid ufrd vkj vkpkj & lfgrk gkA

4- vk; l vf/kd lEifÙk oky ,o jx gkFkk idM x;s ykdlodk d fo:) fcuk Lohdfr d vfHk;kx pyk;A

5- ,lk dkuu cuk; ftle Hk"V ykd lodk l {kfrifr djok;h tk;A

6- fodkl ;ktukvk dk lekftd vd{k.k djoku d fy, fn'kk & fun'k r;kj gkA

7- iz'kklfud dk;i.kkyh ljy gk rFkk ,d f[kMdh dh 0;oLFkk gkA

8- lHkh foHkkxh; fu;ek vkj lfgrkvk dh fujrj leh{kk gkA

9- lR;fu"Bk d le>kr ykx fd; tk;A blds fy, lfo/kku] vf/kfu;e vkj Hk"Vkpkj fuokj.k vf/kfu;e e l'kks/ku gkuk pkfg,A

10- turk l tMh Lofoodh 'kfDr;k dk de djuk pkfg,A

11- iR;d Lrj ij i;o{k.k vkj fu;=.k lfØ; vkj iHkkoh gkA

12- iR;d vf/kdkjh dh okf"kd xkiuh; fjikV e ,d LrEHk ;g Hkh gk fd mlu Hk"Vkpkj ij fu;=.k d fy, D;k D;k mik; fd;A

13- ftu dk;ky;k e Hk"Vkpkj lHkkouk vf/kd g] ogk dk;k dk fofHkUu 0;fDr;k e ckVA

14- vku& ykbu f'kdk;r fuxjkuh 0;oLFkk gkuh pkfg,A

15- tgk vfu;ferrk dk FkkMk Hkh lnsg fey ogk rjr tkp djd dk;okgh 'k: gkuh pkfg,A

16- QkjfUld vd{k.k gkuk pkfg,A

17- Hk"Vkpkj d C;kjk gr jk"Vh; vkdMk dk xBu gkuk pkfg,A

18- bekunkj ykd lodk dh lj{kk o lj{k.k gkuk pkfg,A

19- ykd lodk d fo:) Lohdfr dk vf/kdkj dUæh; lrdrk vk;Dr dk fn;k tkuk pkfg,A

20- iR;d foHkkx] lxBUk ,o e=ky; e lpuk& ik|kfxdh dk i;kx fd;k tkuk pkfg,A

21- lpuk d vf/kdkj d rgr lHkh dk;ky; Lo- ij.kk l gh viu i;o{kd vf/kdkfj;k dk lpuk nA

22- egRoi.k ekey fdlh ,d 0;fDr dk u ndj fdlh ,d lfefr dk fn; tku pkfg,A blrjg ;fn bu बिंदुओं का भासन–प्रश्kklu e ikyu fd;k tk; rk u doy Hk"Vkpkj Ikj vd'k yxxk vfir ufrd eY;k dk lpj.k gkxk rFkk l'kklu dh LFkkiuk gkxhA

i- lkotfud thou e ufrdrk D;k vko';d g\ rFkk ukyu lfefr }kjk fn;s x;s fl)kUrk dk Li"V djs\

m- f}rh; i'kklfud l/kkj vk;kx dh pkFkh fjikV ^ भासन में नैतिकता होना कमेटी }kjk flfoy lok e l/kkjk dh odkykr dju ,o oreku e ufrd eY;k d iru dk n[kr g, i'kklfud uhfr'kkL= dk v/;;u vifjgk; gA bldk vk/kkj LrEHk g ^ lkotfud thou e ufrdrkA

lkotfud thou e ufrdrk& bldk rkRi; g fd 0;fDr dkuu vkj turk d ifr lR;fu"B tokcng vkj fu"i{k cuk jgA ufrdrk dk vk/kkj mRrnk;h vkj tokcngh gkrh gA ykdr= e lkotfud in ij vklhu 0;fDr dk vrr% turk dk tcko nuk gkrk gA

lkotfud thou e ufrdrk blfy, vko';d g %&

turk vkj vf/kdkjh d chp vPN lc/k cu jgA

dkuuk ,o lfo/kku dk ikyu gkA

tufgr vkj 0;fDrxr ykHk d chp l?k"k u gk A

lkotfud thou e ,d vkn'k dh LFkkiuk gkA

lkotfud thou e ufrdrk d lc/k e lu 1994&1997 e fcVu }kjk xfBr ukyu lfefr u lkotfud thou d fuEukfdr fl)kUr crk;&

1- fu%LokFkfu"Bk %& lkotfud in ij vklhu ykxk dk tufgr l lcf/kr fu.k; Lo; gh yu pkfg,A ijr viu] viu ifjokj vkj fe=k dk foÙkh; ;k Hkkfrd ykHk igpku d fy, ,lk djuk vufpr gkxkA

2- lR;fu"Bk & lkotfud in ij vklhu ykxk dk ckgjh 0;fDr;k ;k lxBuk d lkFk foÙkh; ;k vU; ncko l viu dk fylr ugh djuk pkfg,] tk mud ljdkjh dk; e n[kyvnkth djA

3- fo"k;fu"Brk & lkotfud in ij vklhu ykxk dk ljdkjh dke viu p;u dh ;kX;rk d vk/kkj ij dju pkfg,] tl& lkotfud fu;fDr;k djuk] lfonkvk dk Lohdfr inku djuk ;k fdlh 0;fDr fo'k"k dk ykHk ;k ijLdkj dh flQkfj'kा करना आदि भामिल है।

4- tokcngh& lkotfud in ij vklhu ykxk dk viu fu.k; vkj dk;okgh d fy, turk d ifr tokc ngh gkuk gkxkA vkj viu in d fy, tk mfpr Nkuchu vko';d g og iLrr djuh pkfg,A

5- fu"diVrk & lkotfud in ij vklhu ykxk dk viu fu.k; vkj dk;okgh lc/kh ekeyk e fu"diV gkuk pkfg,A mUg viuh dk;okgh d fy, dkj.kk dk mYy[k djuk pkfg, vkj fdlh lpuk dk nu ij rHkh jkd yxkuh pkfg, tc&tu fgr e bldh ekx gkA

6- bekunkjh& ljdkjh in/kkjh 0;fDr;k dk ljdkjh dke l lcf/kr futh fgrk dh ?kk"k.kk djuh pkfg, vkj ,l fdlh fojk/k d lek/kku d fy, dne mBk, tk fgrk dh j{kk dju e lg;kxh gkA

7- urRo& ljdkjh in ij vklhu ykxk dk viu urRo }kjk bu fl)krk dk leFku dj c<kok nuk pkfg,A

lkjr% ekuo d ufrd ,o vk/kjHkr fodkl e 'kklu & i'kklu e Hk"Vkpkj ij vd'k yxku] thou e lQyrk] thou thu dk rjhdk lh[ku] lonu'khyrk vkj lR;fu"Brk d fodkl vkfn e ;g cgr mi;kxh gA